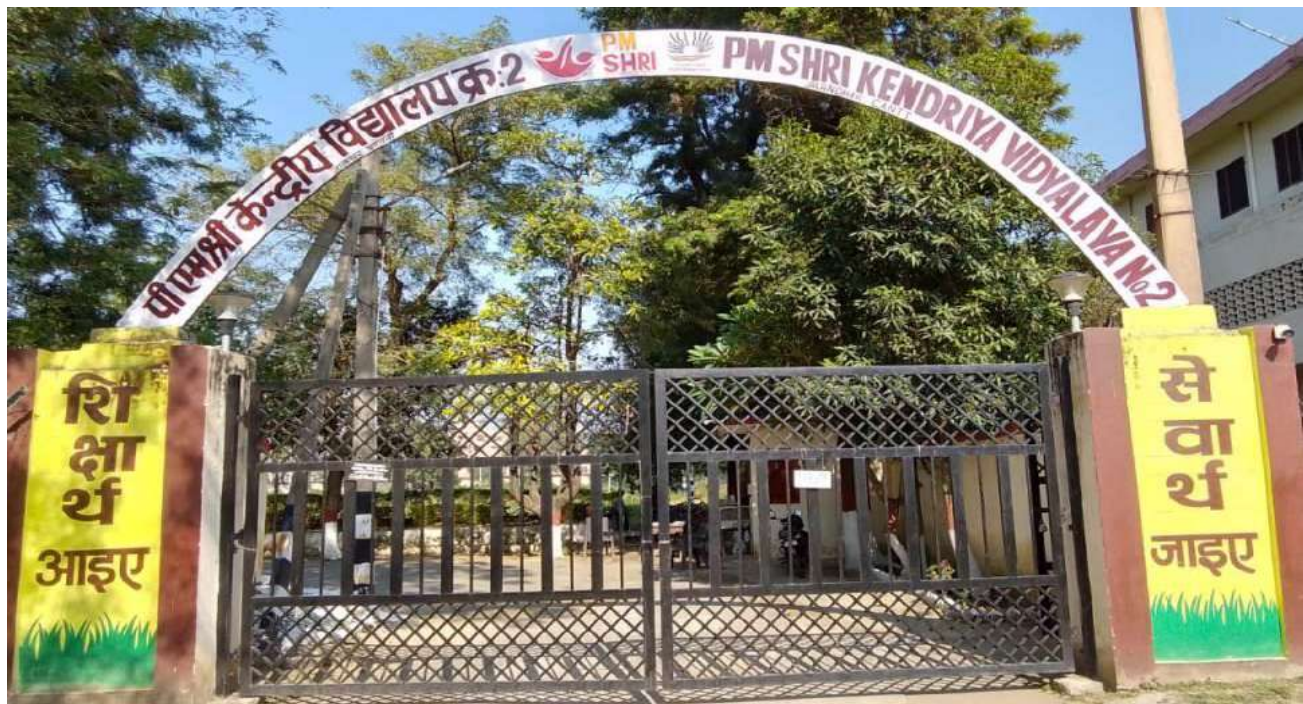




सृजन (ई- पत्रिका)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक- 02 ,जालंधर छावनी
मुख्य संरक्षक
श्रीमती प्रीति सक्सेना
उपायुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन , चंडीगढ़ संभाग

मार्गदर्शक

श्री जुगल किशोर
सहायक आयुक्त
के० वि० संगठन , चंडीगढ़ संभाग

श्री आर. सी. शर्मा
सहायक आयुक्त
के० वि० संगठन , चंडीगढ़ संभाग

श्री पी. सी. तिवाड़ी
सहायक आयुक्त
के० वि० संगठन , चंडीगढ़ संभाग

संरक्षक

श्री रविंदर कुमार, प्राचार्य

परामर्शदाता

श्री उग्र मोहन यादव, उपप्राचार्य

संपादक मण्डल

हिन्दी अनुभाग-	डॉ० सुशील कुमार - स्नातकोत्तर शिक्षक	(हिन्दी)
	श्रीमती किरनदीप - प्र० स्नातक शिक्षिका	(हिन्दी)
संस्कृत अनुभाग-	श्रीमती पूजा - प्र० स्नातक शिक्षिका	(संस्कृत)
अंग्रेज़ी अनुभाग-	डॉ० रंजन बाला - स्नातकोत्तर शिक्षिका	(अंग्रेज़ी)
	श्रीमती कुमारी गुलशन - प्र० स्नातक शिक्षिका	(अंग्रेज़ी)
पंजाबी अनुभाग-	सुश्री सुनीता - प्र० स्नातक शिक्षिका	(पंजाबी)



प्रीति सक्सेना

उपायुक्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन , चंडीगढ़ संभाग

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

“Education is a shared commitment with high expectations among dedicated teachers, motivated students, and enthusiastic parents.” - Bob Beauprez

केन्द्रीय विद्यालय संगठन एक अद्वितीय संस्थान है जो स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर विकसित परिदृश्यों की चुनौतियों का सामना करने, अपने शिक्षकों के उत्थान एवं उन्नयन को सुनिश्चित करने तथा शैक्षिक नवाचार के माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नियमित रूप से प्रयासरत रहता है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पास विद्यार्थियों को समग्र शिक्षा प्रदान करने की एक समृद्ध विरासत है, जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता अपितु चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना पर भी केंद्रित है। विद्यार्थियों के सुदृढ़ एवं उज्ज्वल भविष्य सृजन के हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकवृंद, कर्मचारी सदस्य और अभिभावकगण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास का मार्ग प्रशस्त कर उसे समग्रता की ओर उन्मुख करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। हमें वांछित लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर सार्थक प्रयास करना है। मुझे विश्वास है कि सभी समर्पित सदस्यों के संयुक्त प्रयासों और अपने संरक्षकों के आशीष से हम अपने विद्यार्थियों को उन्नति के शिखर पर स्थापित करने के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

मैं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की संभावनाओं और अवसरों को लेकर उत्साहित हूँ और आप सभी के साथ मिलकर काम करने के लिए आशावान हूँ। आइए ! हम अपने सम्मानित केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सेवा करने में तत्पर रहकर, इसे व अपने संभाग को उत्कृष्टता की सर्वोच्च ऊंचाइयों तक ले जानें के लिए लगन से काम करने की अपनी प्रतिबद्धता को और मजबूत करें।

सभी विद्यार्थियों, शिक्षकवृंद एवं अभिभावकगण को हृदय की गहराइयों से उज्ज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ।



प्राचार्य संदेश

स्वामी विवेकानंद ने कहा था - “हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने , मानसिक विकास हो, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके”। हम इसी उद्देश्य के साथ कार्यरत हैं। नयी शिक्षा नीति समाज को नयी चुनौतियों के लिए तैयार करती है। वर्तमान समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। आज हम तकनीकी के आधुनिकतम स्वरूप में नयी शिक्षा नीति के साथ जुड़कर फंडामेंटल लर्निंग के साथ आधारभूत शिक्षा को मजबूत करके आगे बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर नए फ्रेमवर्क के अनुरूप शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। नवीन पद्धति ने मूल्यांकन को विद्यार्थी केंद्रित करके अधिगम को सहज किया है। यह गौरव का विषय है कि शिक्षा का स्वरूप भी ग्लोबल हुआ है। अब भारतीय विदेशों में प्रतिष्ठित संस्थानों में उच्च पदों पर कार्यरत होकर देश का गर्व और गौरव बढ़ा रहे हैं। हमें इस शृंखला को और भी मजबूत बनाते हुए निरंतर कार्य करना है।

शिक्षा की त्रिधुवीय प्रक्रिया में विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारा अभिभावकों से आग्रह है कि वह अपनी भूमिका को निभाकर इस ज्ञानयात्रा को सफल बनाने में सहयोग करें। केन्द्रीय विद्यालय दुनिया के श्रेष्ठ शिक्षा संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। हमें गर्व है कि हम इस पद्धति के अंतर्गत विद्यार्थियों को शिक्षित कर योग्य बना रहे हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अकादमिक गतिविधियों के साथ-साथ पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ, खेल गतिविधियाँ, अटल टिंकरिंग गतिविधियाँ, कार्यानुभव गतिविधियाँ, विज्ञान गतिविधियाँ, चित्रकला आयोजन, सामाजिक विज्ञान गतिविधियाँ, भाषायी गतिविधियाँ व कम्प्यूटर गतिविधियाँ, एन०सी०सी० गतिविधियों का आयोजन करवाया जाता है।

हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए मंच प्रदान करवाना है। विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मकता के साथ विद्यालय में आयोजित गतिविधियों को सबके सामने लाने का माध्यम है। प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका विद्यार्थियों को उचित मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका आप सभी के मध्य प्रस्तुत करते हुए हमारे लिए हर्ष की अनुभूति है साथ ही दायित्वबोध भी। आप पत्रिका को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करवाएँ। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके सुझावों से भविष्य में और भी बेहतर कार्य कर पाएंगे। इसी आशा के साथ सभी का धन्यवाद।



उपप्राचार्य की कलम से.....

विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन बड़े हर्ष का विषय है। अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति चित्रों अथवा शब्दों के माध्यम से करना मानव की सहज प्रवृत्ति रही है। विद्यालय पत्रिका बालमन की इसी सहज प्रवृत्ति को अभिव्यक्ति देने वाला एक मंच है, जहाँ अपने अंतः की सृजनशीलता को प्रकट करने का अवसर प्राप्त होता है। आज के भागदौड़ भरे जीवन में नवसृजन का आस्वादन भी अपने आप में एक विश्रामस्थल की अनुभूति देता है। बच्चों में एक दूसरे की भावनाओं से परिचित होते हुए अपने अंदर की सृजनात्मकता को विकसित करने का प्रयास करने की प्रेरणा ही इस पत्रिका का ध्येय है।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संलग्न विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को साधुवाद और हार्दिक शुभकामनाएँ।

उग्र मोहन यादव

उपप्राचार्य



संपादक की कलम से ...

यह संसार ईश्वर की सबसे सुन्दर रचना है। अन्य सृजन उसकी प्रतिकृति मात्र है। प्रकृति के निमित्त नदियाँ बहती हैं , सूर्य प्रकाशमान है , वायु बहती है, पंछी चहचाहते हैं , फूल खिलते हैं। इन सबसे ही यह संसार गतिशील बनता है। यह प्रकृति की सबसे सुन्दर कविता है। तुलसीदास जी ने साहित्य को सूरज और नदी की तरह सबके लिए सुखकारी बताया है। साहित्य समाज की दशा को बताते हुए समाज को दिशा भी देता है। ऐसे समय में जब ज्ञान का विस्तार गुरु जी से लेकर गूगल तक हुआ हो तब तो यह और भी आवश्यक हो जाता है कि ज्ञान की धाराएँ उन्मुक्त होकर बहें। ज्ञान से सभी लाभान्वित हों और वह समाज-उत्थान में सहायक हो। शिक्षा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्तमान समय में यह चुनौती है कि मानवता के रूप में हम विश्व को एक परिवार बनाएँ और जीवन में प्रगतिशील बनें। महात्मा बुद्ध ने कहा था- “चरैवेति –चरैवेति” अर्थात् सदैव चले रहो , प्रगतिशील रहो। विद्यालय ज्ञान विज्ञान की यात्रा में अपना योगदान देता है। जब समय तीव्र गति से बह रहा है , ज्ञान विज्ञान नवाचार की प्रक्रियाओं से गुजरकर बहुआयामी हो रहा है तब यह चुनौती हो जाती है कि हम ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, कला ,संगीत की सामाजिक संदर्भों से जोड़कर उसका प्रचार प्रसार करें। विद्यालय इसमें महती भूमिका निभाते हैं। शिक्षण के साथ- साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का दायित्व भी शिक्षक का होता है। यह पत्रिका उसी शृंखला की एक कड़ी है। रचनात्मक स्तर पर विद्यार्थियों को सक्षम बनाएँ। यह विचार करके ही पत्रिका को कागज़ रहित (ई- पत्रिका) के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। नयी पीढ़ी तकनीकी में समर्थ और सक्षम है। यह पत्रिका इसका प्रमाण बनेगी। छात्रों, सहयोगियों ने अपनी रचनाएँ टंकित करके सॉफ्ट कॉपी में भेजी और अन्य पहलुओं में पर्याप्त योगदान प्रदान करके पत्रिका का प्रकाशन सफल बनाया है। आज के विद्यार्थी ही भविष्य के रचनाकार बनेंगे। आपकी प्रतिक्रिया हमें आगामी पत्रिका को और भी रचनात्मक व प्रभावी बनाने में सहयोग करेगी। इसी आशा के साथ ई- पत्रिका आपके साथ साझा कर रहे हैं।

डॉ० सुशील कुमार

स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)



From the Editor's Desk...

We are delighted to announce with great pride that we have prepared an extraordinary array of vibrant hues and optimistic aspirations for our forthcoming issue, which is destined to capture and immortalize the most precious moments of our school. This magazine serves as a catalyst for nurturing children's innate creative impulses. It provides a platform for young and budding minds to embark on a journey of imagination and self-expression, fostering a world of beauty through the written word.

Our sincere endeavor is to empower the emerging talents within our school community, allowing them to showcase their creative abilities through captivating articles, engaging riddles, evocative poetry, and mesmerizing artwork. In addition, you will discover a wealth of contributions from both students and faculty members, comprising inspirational thoughts, as well as informative and captivating write-ups.

We hold firm hope that the positive attitudes, diligent efforts, and unique ideas of our young contributors will captivate readers, transporting them to a surreal world of boundless joy and amusement.

We extend our heartfelt gratitude to our erudite Principal Sh. Ravinder Kumar, whose foresight and guidance have been instrumental in bringing this beautiful publication to fruition.

We are immensely grateful to the esteemed members of the Editorial Board, the Computer department, and all the students and teachers who have been invaluable in breathing life into the pages of this magazine. Their collective efforts have resulted in the creation of a remarkable publication.

To all our esteemed readers, we extend our warmest wishes and sincerely hope that this magazine will garner widespread acclaim, becoming an integral part of children's holistic growth and development.

Happy Reading!

Dr. Ranjan Bala PGT (English)

अनुक्रमणिका

हिन्दी अनुभाग पृष्ठ संख्या	1 से 38 तक
संस्कृत अनुभाग पृष्ठ संख्या	39 से 42 तक
अंग्रेजी अनुभाग पृष्ठ संख्या	43 से 55 तक
पंजाबी अनुभाग पृष्ठ संख्या	56 से 64 तक
छाया चित्र पृष्ठ संख्या	65 से 111 तक

हिन्दी अनुभाग

समंदर भर सेलेबस है, (बंदना-आठवीं- अ)

नदी भर पढ़ते हैं ,

बाल्टी भर ही नम्बर आते हैं ।

जिसमें हम डूब जाते हैं ।

काश कोई एग्जाम रिजल्ट का

इंश्योरेंस करा देता हो, हर एग्जाम

के पहले प्रीमियम भरवा देते, पास

होते तो ठीक होता वरना इंश्योरेंस

क्लेम करवा लेते।

कह दो उन पढ़ने वालों से ,

हम भी पढ़ा करते थे जितना

सिलेबस पढ़कर वो टॉप करते हैं।

उतना तो हम चांस पर छोड़ देते हैं ।

किताबें बहुत सी पढ़ी होगी आपने

मगर कोई क्वेश्चन भी पढ़ा होगा,

पढ़ा मेरे दोस्त, नज़र से पढ़ा है,

बता मेरे क्वेश्चन का क्या क्या आंसर है ।

यह दुआ है मेरी उस रब से (सुखदेव - दसवीं ब)

मुझे लौटा दे मेरे सपनें
जो देखे ते कभी मैंने
जो रह गए है अधूरे
सोचता हूँ वो मेरा अतीत था
जो ना भूल पाऊँगा मुझे यकीन था
काश वो पल लोट कर वापस आए
पुछू तो मैं उस रब से ,
क्या हम तुम्हें रास ना आए ?
दुःख होता है जब दूसरों को देखता हूँ
उन्हें देख कर यही सोचता हूँ
कि क्या हम इतने गये गुजरे थे
कि हम वो भी हासिल न कर पाए
जिनको पूरा करने में दिन रात गुजरे थे
शायद लिखा होगा कम्बख्त ज़िन्दगी में यही
रहना पड़ेगा इन हालातो में अभी
पर ये दिल है कि मानता नहीं
विश्वास है इसे कि दिन लौट कर आएंगे वही
कि दिन लौट कर आएंगे वही ॥

बारिश के बाद का दृश्य (साक्षी कुमारी मीना – नवीं ब)

बारिश के बाद का मनमोह लेने वाला दृश्य,
जहाँ दिखाई देते हैं हरे - भरे पत्तों से लदे पेड़।
बारिश के बाद का सुहाना मौसम ,
जहाँ दिखाई देते हैं क्यारियों में भरे पानी में नहाते पक्षी।
बारिश के बाद का दृश्य,
जहाँ दिखाई देता है यह सुंदर वातावरण।
बारिश के बाद का यह अतिसुंदर दृश्य,
जहाँ दिखाई देते हैं प्रकृति के भिन्न - भिन्न रंग।

राजस्थान की धरती पर (साक्षी कुमारी मीना – नवीं ब)

संस्कृति की है अमिट छाप ।

महरेजा, घूमर, और कठपुतली की कहानी, राजस्थानी संस्कृति की पहचान है।

किले है जैसलमेर के, झीलें है उदयपुर की, महल है जोधपुर के, और दरगाहें है अजमेर की।

राजस्थान की संस्कृति में, एक अनोखी और अमिट छाप है।

लोकगीत, और वेशभूषा,

राजस्थानी संस्कृति की पहचान है।

राजस्थान की धरती पर,

संस्कृति की अमिट छाप है।

मारवाड़ की धूल और मेवाड़ की शान,

राजस्थान की संस्कृति में सबकी अपनी पहचान।

राजस्थान की धरती पर, संस्कृति की अमिट छाप है।

बेटी (मीनाक्षी मीना - सातवीं स)

जब घर आती है बेटी

खुशियों की बौछार लाती है बेटी

उम्मीद की नयी किरण है बेटी

जीने का नया सहारा है बेटी

पिता के जिगर का टुकड़ा है बेटी

माँ की हिम्मत है बेटी

चाँद नहीं पर चाँदनी है बेटी

बेटे से बढ़कर है बेटी

भगवान का अनमोल तोहफा है बेटी

जिस घर में जाए उस घर में उजाला फैला देती है बेटी

बेटी की कीमत उससे पूछो

जिसके पास नहीं है बेटी ।

स्कूल का रास्ता (हरकीरत कौर तीसरी -ब)

मानवी जी स्कूल गए ,

रास्ता स्कूल का भूल गए

रास्ते में थे डरे-डरे

पहुँचे कक्षा में अरे अरे !

छुट्टी का नोटिस देखकर खुशी से फूल गए

दोनों बाँहें माँ के गले से झूल गए

नहीं हुआ है अभी सवेरा (संकलन- एलेक्षी -चौथी -ब)

नहीं हुआ है अभी सवेरा

पूरब की लाली पहचान

चिड़ियों के जगने से पहले

खाट छोड़ उठ गया किसान

खिला-पिलाकर बैलों को ले

करने चला खेत पर काम

नहीं कभी त्योहार, न छुट्टी

है उसको आराम हराम

गरम-गरम लू चलती सन- सन

धरती जलती तवा समान

तब भी करता खेत पर काम

कितना मेहनती है किसान

जय जवान जय किसान।

मेरी प्यारी माँ (नव्या – दूसरी - अ)

मेरी प्यारी माँ

एक माँ ही होती है

जो बच्चों को खुशियाँ दे देती है

माँ सब दुःख खुद ले लेती है

खुद भूखे पेट सोकर

माँ बच्चों को भर पेट खिलाती है

अगर चोट लगे बच्चे को

माँ दौड़ी आती है

गले लगा सारे दुःख भूल जाती है

इसलिए माँ सबसे प्यारी कहलाती है।

मेरे प्यारे पापा (सिमरन – चौथी – स)

मेरे प्यारे-प्यारे पापा

मेरे दिल में रहते पापा

मेरी खुशियों के लिए

सब कुछ सह जाते पापा

पूरी करते सारी इच्छा

कोई नहीं है उनसे अच्छा

मम्मी मेरी जब भी डाँटें

प्यार से मुझे दुलारे पापा

मेरे प्यारे प्यारे पापा।

माँ - मुनव्वर राना (संकलन- पुनीत – पाँचवीं - अ)

(विनम्र श्रद्धांजलि - 14 जनवरी 2024 को निधन)

इस तरह वो मेरे गुनाहों को धो देती है

माँ बहुत गुस्सा होती है तो रो देती है।

बुलंदियों का बड़े से बड़ा निशान छुआ

उठाया गोद में माँ ने तब आसमान छुआ।

किसी को घर मिला हिस्से में किसी के दुकां आयी

मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में माँ आयी।

ज़रा सी बात है लेकिन हवा को कौन समझाये,

दिये से मेरी माँ मेरे लिए काज़ल बनाती है।

छू नहीं सकती मौत भी आसानी से इसको

यह बच्चा अभी माँ की दुआ ओढ़े हुए है।

यूँ तो उसको सुझाई नहीं देता लेकिन

माँ अभी तक मेरे चेहरे को पढ़ा करती है।

वह कबूतर क्या उड़ा छप्पर अकेला हो गया

माँ के आँख मूँदते ही घर अकेला हो गया।

उमंग (परिणीता - छठीं – ब)

उमंग है कुछ करने की

उमंग है कुछ बनने की

समाज में नया बदलाव लाने की

अपना अस्तित्व बनाने की

उमंग है कुछ नया करने की

अपना इतिहास बनाने की

उमंग है कुछ करने की

उमंग है कुछ बनने की।

शिक्षा- (आराध्या कुमारी – पाँचवीं – अ)

हम है भारत के बच्चे

हम हार कभी न मानेंगे

हम अपने कदम बढ़ाएंगे

हम आगे बढ़ते जाएंगे

शिक्षा है हथियार हमारा

हम समय पर विजय पाएंगे

हम हार कभी न मानेंगे

हम अपने कदम बढ़ाएंगे

हम आगे बढ़ते जाएंगे ।

हम भारत के वीर जवान (आरव पॉल – चौथी – स)

हम भारत के वीर जवान

ऊँची रहेगी हमारी शान

गाएँ देश प्रेम के गान

हमें तिरंगे पर अभिमान

तिरंगा हमारी आन बान शान

इस पर तन मन धन कुर्बान ।

मेरी भारत माता (एन . नंदना पाट्टी श्री – पाँचवीं –स)

यह मेरी भारत माता है

बोलने वाली भाषाएँ अनेक

पर सबके विचार एक

अनेकता में एकता की मिशाल

भारत का यही कमाल

दिया विश्व को भाईचारा

गूँजा जग में नाम हमारा

जुबान पर नाम ही एक ही आता

मेरी प्यारी भारत माता

बोलो अब होकर निर्भय

प्यारी भारत माता की जय ।

प्यारा हिन्दुस्तान (रमणिक कौर – पाँचवीं)

देश हमारा सबसे प्यारा,
प्यारा हिन्दुस्तान ।
भारत माता हमें बुलाती ,
माँ ! तू बड़ी महान ।
पर्वत- पर्वत हमें सुनाती,
मंगल- मंगल गान ।
देश हमारा सबसे प्यारा ,
प्यारा हिन्दुस्तान ।
नदियाँ मिलकार हैं बनाती,
हरा-भरा मैदान ।
प्यारा हिन्दुस्तान !

शिक्षा देने वाले महान (गायत्री- दूसरी- ब)

शिक्षा देते गुरु हमारे
हमको सारे जहान से प्यारे
पढ़ना लिखना हमें सिखाते
बुरा भला जो हमें समझाते
शिक्षक हैं उपकार करते
अज्ञानी को ज्ञानी करते
हमें मन लगाकर पढ़ना
बड़े होकर अफसर है बनना
ऊँचा देश का नाम करेंगे
गुरुओं का मान करेंगे ।

किताबें (यामिनी – चौथी – अ)

बंद अलमारी के शीशों से
किताबें झाँकती
बड़ी हसरत से हमें ताकती
महीनों तक मुलाकात न होती
रोज़ रोज़ कहाँ बात भी होती
सुबह शाम संग रहते थे
सब कितने खुश रहते थे
जब से मोबाइल आया है
बस वही तो छाया है
अब किताब किसे हैं भाती
पड़ी पड़ी धूल है खाती
छोड़ मोबाइल पढ़ो किताब
जागेंगे हम सबके भाग ।

स्वच्छता - अभियान (सिमरनजोत कौर – चौथी –स)

साफ़ सफ़ाई की आदत डालो,
अपन भारत स्वच्छ बनालो
कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
अच्छी आदत को अपना लो
साफ़ सफ़ाई को अपनाओ ,
सुन्दर अपना शहर बनाओ
बापू का था यही सपना
स्वच्छ सुन्दर हो भारत अपना ।

घर (रवनीत कौर- दूसरी –अ)

घर कितना प्यारा घर

घर आराम दिलाता प्यारा घर

घर में मिलता सबको प्यार

सब है इसके कर्जदार

घर सबको साथ मिलाता

घर से नाता जुड़ता जाता ।

कोयल (काव्या – चौथी – स)

कोयल बोली बोल न सकी

ट्रेन पर चढ़ी तो सीट न मिली

सीट न मिली तो रोने लगी

बच्चे ने बोला आज मेरे पास

आजा पास मेरा घर है पास

कोयल फिर हो गयी उदास ।

सौरमंडल का पाठ (दिव्यांशी- दूसरी – अ)

बच्चो आओ आज पढ़ें
हम सौरमंडल का पाठ
सूरज है परिवार का मुखिया
कुल ग्रह हैं इसके आठ
परिक्रमा सूरज की देखो
लगातार सब हैं करते
अपनी- अपनी कक्षाओं में
सब चक्कर काटा करते
बुद्ध है सबसे निकट सूर्य के
शुक्र का नंबर है दूजा
तीजे पर पृथ्वी है अपनी
इस जैसा न ग्रह है दूजा
चौथा मंगल बृहस्पति हैं पाँचवाँ
शनि छठे नंबर पर बना
यूरेनस का नंबर सातवाँ
नेपच्यून का नंबर आठ
देखों सौरमंडल के ठाठ ।

प्यारे – प्यारे यह फूल (निशा – चौथी – स)

प्यारे – प्यारे यह फूल

रंग बिरंगे फूल तितलियों को न्यारे फूल

तितलियाँ इन पर मंडराती

इसके रस से शहद बनाती

दूर दूर तक खुशबू फैलाते

हमको हँसना यह सिखाते

प्यारे प्यारे यह फूल

हम सबके हैं न्यारे फूल

सबसे ज्यादा गुलाब प्यारे

रंग बिरंगे कितने सारे

काँटों में भी खुशी से खिलते

हंसकर जीना हमें सिखाते ।

एक और एक -ग्यारह (तनीष तीसरी – स)

एक- एक यदि पेड़ लगाओ

तो तुम बाग लगा दोगे ।

एक- एक यदि ईंट जोड़ों ,

तो तुम महल बना दोगे ।

एक- एक यदि पैसा जोड़ो

तो बन जाओगे धनवान ।

एक- एक यदि अक्षर पढ़ लो

तो बन जाओगे विद्वान

याद रखो यह वचन हमारा

एक और एक हो जाते ग्यारह ।

पेड़ (वैष्णवी पन्त – पाँचवीं- ब)

जीवन का आधार पेड़ हैं ,
शुद्ध हवा यह देते हैं
फल-फूल छाया देते
नहीं किसी से कुछ लेते हैं
धरती के आभूषण हैं यह
मानव पर करते उपकार ,
उपकारी यह पेड़ जगत में
प्रकृति का हैं उपहार ।

पेड़ बचाओ (अनन्या – पाँचवीं – स)

पेड़ बचाओ , पेड़ लगाओ
हरी-भरी धरती को बनाओ
बड़े पेड़ , छोटे पेड़
आस-पास इनको तुम लगाओ
इनसे हरियाली बढ़ेगी
वातावरण स्वच्छ बनेगा
आज लगाओ जो पेड़
पीढ़ियों तक फल मिलेगा ।

पेड़ मत काटो (सोफ़िया – चौथी – स)

मैं हूँ पेड़

मुझे मत काटो

टुकड़ों टुकड़ों में मत बाँटों

दर्द मुझे भी होता है

मेरा मन भी रोता है

मैं हूँ मित्र तुम्हारा

सखा हूँ सबसे न्यारा

अपने फल खुद नहीं खाता

सब जग को ही दे जाता

जहरीली गैस भी पी जाता

शुद्ध हवा तुमको पहुँचाता

सूरज का ताप भी सह जाता

कुछ कभी नहीं कह पाता

मैं हूँ जीवन का आधार

फिर भी तुम मुझ पर करते प्रहार

सुनो तुम सब खोलकर कान

वृक्षों का करो सम्मान

मेरा भी है जग में अधिकार

मैं हूँ जीवन का आधार ।

चींटी (कृषिका -चौथी -स)

चींटी करती मेहनत खूब

कभी न थकती सहती धूप

भार उठाती खुद से ज्यादा

कभी न भूलती मेहनत का वादा

रात दिन करती है एक

बनी रहती सदा नेक

आपसे एक ही विनती

आओ ! बने मेहनती।

माँ (नीतिका नरवाल -छठीं स)

मेरी हर गलती को वो माफ़ कर देती है।

बहुत ज़्यादा गुस्से में हो तो भी वो हमेशा प्यार ही करती है।

होठों पर उसके हमेशा दुआ ही होती है।

ऐसी सिर्फ और सिर्फ माँ ही होती है।

कविता (तन्मय लाहोत - पाँचवीं -स)

(यह कविता उन सभी दादा, दादी को समर्पित है जिनकी वजह से हमारा बचपन हसीन होता है।)

खुश नसीब हैं जिनको दादा-दादी का प्यार मिला है,

ये दुनिया का सबसे बेहतरीन सिलसिला है।

जिनकी छाया में, हमने सारे सुख पाएँ

जिनकी अंगुलियों को पकड़ कर हम चल पाएँ

जिनके होने से हम मार से बच पाएँ

जिनके साथ दुनिया भर को जान पाएँ

जिन्होंने अपने हिस्से को हमारे नाम किया

जिन्होंने सुबह उठकर पहले हमारा नाम लिया

जिनके लिए हम अनमोल खजाना है

जिनके लिए हम खुश होने का बहाना है

जिनको हमारा स्कूल जाना याद रहा

जिनको वक्त पर घर लौट आना याद रहा

जो हमारे लिए सारे जग से लड़ जाते हैं

जो हमारी दुनिया को और हसीन बनाते हैं

जिनकी कहानी हमको रोज सुलाती है

जिनके बिन यह दुनिया अधूरी रह जाती है

आज उनके लिए समर्पित मेरा गान है

मेरे दादा दादी नाना नानी मेरा अभिमान हैं।

पिता (प्रियंका – दसवीं –अ)

कहते हैं जन्नत है पिता
पर मेरा मानना है मन्नत है पिता
ऐसी छाँव है पिता जो धूप से बचा ले
ऐसी नाव है पिता जो सागर में घुमा दे
घर का वह सदस्य है पिता
जो सबको समझा दे
ऐसे शिक्षक हैं पिता
जो हँसते खेलते जिंदगी का पाठ पढ़ा दे
कुछ ऐसे होते हैं पिता
जो अपनी इच्छाओं को मारकर
आपकी इच्छाएँ पूरी करते हैं
जो अपने लिए नए कपड़े खरीदने न जाएँ
वह आपको पैसे देने में न हिचकिचाएँ
माना कभी मुझे इतना खास लाड़ न लड़ाया
पर हाँ उन्होंने मुझे प्यार गुस्से में भी दिखाया
मेहनत करने से न कभी हिचकिचाते हैं
सर्वदा हमारी इच्छाओं को
हमारे पिता पूरा करना चाहते हैं
अगर कभी अवसर मिला
अपने प्यार का इज़हार करने का
तो कुछ और नहीं, प्रयास करूँगी पापा
आपका सिर ऊँचा करने का ॥

बेटी (तानिया – आठवीं –अ)

लोग कहते तुम लड़की हो याद रखना ,
कभी लड़का बनने की कोशिश न करना
लोगों ने ही यह रस्म बनाई है
कहते हैं बेटियाँ पराई हैं
बेटी ने कहा कि मेरे हिस्से में ही यह रस्म क्यों आई है
हर जगह यही सुनने को मिलता है
कि जा बेटी तू पराई है
लोग कहते हैं लक्ष्मी घर में आई है
फिर क्यों लक्ष्मी बनाई पराई है?

शौर्य (कविता तिवारी- संकलन मानसी सोनी – आठवीं – अ)

क्षितिज तक शौर्य गुँजेगा स्वयं दिनमान बदलेगा
उतारो भारती की आरती सम्मान बदलेगा
विवादों में उलाझकर , कीर्तियां मत करो धूमिल
शहीदों की करो पूजा , तो हिन्दुस्तान बदलेगा
पृथक हर धर्म होता है पृथक परिवेश होता है
पृथकता में रहे मिल जुलकर यह उद्देश्य होता है
कोई जर्ग नहीं ऐसा जहाँ पर रब नहीं होता
लड़ाई वे ही करते हैं जिन्हें मतलब नहीं होता
ओमंदिर और मस्जिद के लिए दीवानगी वालो !
वतन से बढकर दुनिया में कोई मज़हब नहीं होता
अगर व्याकरण समझे तो सुरभित छंद हो जाए
हमारे देश में फिर से सुखद मकरंद हो जाए
मेरे ईश्वर मेरे दाता ये कविता माँगती तुमसे
युवा पीढ़ी संभलकर ही विवेकानंद हो जाए

बचपन (गौरवी सिंह कक्षा – सातवीं - ब)

एक था बचपन।
पता नहीं था क्या है
सही और क्या है गलत
माँ से झूठ न बोल पाते थे
स्कूल से जब भी आते थे
माँ को स्कूल में जो हुआ
सब बताते थे
कक्षा में कोई न नीच
कोई न ऊँच सब को
एक समान मानते थे।
जब भी माँ डाँटती थीं तो
रोते-रोते पापा के पास चले जाते थे
अगर रूठ जाते थे तो मां
मनाने आ जाती थी
दोपहर में खेलते खेलते
शाम कब हो जाती थी
पता ही नहीं चल पाता था
स्कूल में जब भी अच्छा काम
करते थे तो टीचर टाफी देती थीं
बहुत खुश हो जाते थे
यह बात सोच कर सोचते थे कि
हम भी बड़े हो कर टीचर बनेंगे।

डॉ० कलाम - मिसाईलमैन (स्वाति सिंह बारहवीं –अ)

इंसान नहीं वह तो पूरी किताब थे,
वह मिसाईलमैन, बेमिसाल थे।
देश के सच्चे नागरिक थे,
वह तो डॉ . कलाम थे।
चिड़िया को देख चाहा था उड़ना आकाश में,
पर वह तो आर-पार हो गए आकाश के ।'
चमकना था उन्हें एक आईने की तरह,
चमक गए वह तो सूरज की तरह ।
सच में वह कलाम कमाल थे

'बुद्धिमान व्यक्ति यदि परिश्रम करना बंद कर दे तो असफल हो सकता है, लेकिन परिश्रमी व्यक्ति कभी असफल नहीं हो सकता ।

देश का विकास- पार्थवी आम्बरे – नवीं- अ

बच्चा - बच्चा जानता है
कि देश का विकास करना है।
आने वाली पीढ़ी को
शांतिपूर्वक रखना है,
मशीनी युग में मोबाइल फ़ोन और
इन्टरनेट का इस्तेमाल करना है,
परन्तु ज्ञान और विज्ञान का भी
उत्पादन करना है,
अपने से बड़े- बुजुर्गों को भी
आदर और सम्मान देना है,
अच्छाई और सच्चाई से
इन्सानियत को भी लाना है,
जात- पात का भेद न देखकर
लोगों में एकता से रहना है,
आने वाली पीढ़ी को
शांतिपूर्वक रखना है,/ और देश का विकास करना है।

शिक्षक (हरलीन कौर - नवीं ब)

गिरते हैं जब हम, तो उठाते हैं शिक्षक
जीवन की राह दिखाते हैं शिक्षक
अँधेरे जहाँ में बनकर दीपक,
जीवन को रोशन करते हैं शिक्षक
कभी नन्ही आँखों में नमीं जो होती,
तो अच्छे दोस्त बनकर हँसाते हैं शिक्षक
झटकती है दुनिया हाथ कभी जब,
तो झटपट हाथ बढ़ाते हैं शिक्षक
जीवन डगर है जीवन समर है
जीवन संघर्ष सिखाते हैं शिक्षक
देकर अपनी ज्ञान की पूँजी ,
हमें योग्य बनाते हैं शिक्षक
इस देश और दुनिया के लिए ,
एक अच्छा समाज बनाते हैं शिक्षक
नहीं हो कहीं अशांति,
बस यही एक पैगाम फैलाते हैं शिक्षक
गिरते हैं जब हम, तो उठाते हैं शिक्षक
ज्ञान का दीपक जलाते हैं शिक्षक
माता पिता के बाद आते हैं शिक्षक
माता देती हैं हमको जीवन,
पिता करते हैं हमारी सुरक्षा,
लेकिन जीवन को सजाते हैं शिक्षक
शिक्षक बिना न ज्ञान है,
शिक्षक बिना न मान है,
हमारा जीवन सफल बनाते हैं शिक्षक
ज्ञान का दीपक जलाते हैं शिक्षक
संघर्षों से लड़ना सिखाते हैं शिक्षक
सत्पथ पर चलना सिखाते हैं शिक्षक ।

एक बचपन का जमाना था (कोमल प्रसाद साहू)

एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खज़ाना था..
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था..
खबर न थी कुछ सुबह की,
न शाम का ठिकाना था..
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था..
माँ की कहानी थी,
परियों का फ़साना था..
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था..
हर खेल में साथी थे,
हर रिश्ता निभाना था..
ग़म की जुबान न होती थी,
न ज़ख्मों का पैमाना था..
रोने की वजह न थी,
न हँसने का बहाना था..
क्यूँ हो गए हम इतने बड़े ,
इससे अच्छा तो वो बचपन का ज़माना था।

शिक्षक/ शिक्षिका सृजन

सेहत- राग (गज़ल) - श्री उग्र मोहन यादव - उपप्राचार्य

इस तुच्छ तन से कुछ पसीना रोज़ बहना चाहिए ।
खाया जो माल गरिष्ठ है कुछ तो पिघलना चाहिए ।

अब तक निभाई दोस्ती बिस्तर के गद्दों से बहुत
कुछ दिन कठोर धरा को भी बिस्तर बनाना चाहिए ।

घर में हों , या फिर गाड़ियों में या कि दफ्तर में सही
आराम की जकड़न को तन से दूर करना चाहिए ।

सरपट रहे हैं दौड़ पहियों की सवारी करके हम
कुछ दूर तक पाँवों को भी तो दर्द देना चाहिए ।

पैट्रोल , डीज़ल , गैस, बिजली पी रहीं ये गाड़ियाँ
कुछ दूर तक साइकल का भी पैडल घुमाना चाहिए।

घी और तेल के सिंधु में तिरते रहे बरसों तलक
अब ज्वार , मक्के , बाजरे से भी नहाना चाहिए ।

अपना बदन फुटबॉल का भैया बनाया आपने
अब तो इसे हॉकी –स्टिक की बहन बनना चाहिए ।

गैंडे व भैंसे से बहुत प्रतियोगिताएँ हमने कीं
हिरणों से जीती दौड़ का मैडल भी मिलना चाहिए ।

बरसों से भोजन- राग ही दम भर अलापा आपने
सुन 'उग्र' की थोड़ी – सी सेहत-राग गाना चाहिए।

औरत या मेरी आवाज़ - श्रीमती मनजीत कुमारी –स्नातकोत्तर शिक्षिका (गणित)

लाल रंग से क्यों पोतूँ
मैं अपने मन के नूर को
तेरी आँखें क्या देखेंगी
मेरे साँवले गुरुर को ।

सृष्टि को रचने आई
जीवन को जीने आई
मैं क्यों सोचूँ ,
क्या देखा तेरी नज़र के ख्याल ने ।

मैं खुद जितनी ही कर्मठ हूँ
मैं खुद जितनी ही वज्रस हूँ
मुझे क्या ज़रूरत
मर्दाने अभिषेक की ।

मैं धवल रंग जो दिखती हूँ
सारे रंग खुद में रखती हूँ
मैं चाँद को शीतल करती हूँ
मैं सूरज को भी खुद में रखती हूँ।

जो उँगली मुझ पर उठी तो
मैं सिर धड़ से अलग कर सकती हूँ
तू बस अपनी सोच अच्छी रख
मैं तेरे सजदे में भी झुक सकती हूँ ।

सफलता की उम्मीद श्रीमती किरनदीप – प्र० स्नातक शिक्षिका (हिन्दी)
एक बार जब हमने

चींटी को दीवार पर चढ़ते देखा,

नीचे गिरने पर भी उसमें

ऊपर जानें की थी इच्छा,

देखकर मन में

उन बच्चों का ध्यान आया

जो असफल होने पर

सफलता की उम्मीद छोड़ देते हैं

उन्हें चींटी से सीखना चाहिए

कैसे सफलता को पाया जाता है ,

हीनता की जड़ होती है असफलता,

सफलता को प्राप्त करके

सुख प्राप्त होता है

ये दुनिया पीछे है भागती उसके

जो सफलता को प्राप्त करते हैं।

अपने मन के धरातल पर - सुश्री मोनिका – प्राथमिक शिक्षिका

अपने मन के धरातल पर

नित नव रेखा खींच

पराए मन के कुविचारों से न विचलित हों ,

उठ, श्वास ले,

न. . न .. आँखें न मूँद !

अपनी विवेकधारा से अपनी आत्मा को सींच ।

अपने मन को परख ..

अपनी खूबियों को तलाश ..

अपने तरकश में नए तीर रख ..

परमात्मा के हृदय पर अपनी एक तस्वीर खींच ।

अपने मन के धरातल पर नित नव रेखा खींच ।

परमात्मा के हृदय पर अपनी एक तस्वीर खींच।

अपील - आओ सफलता के साथी बने – श्री अमित कुमार – प्र ० स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

अक्सर हम यह सुनते हैं कि वह बच्चा इतना होशियार है। उसने अपने स्कूल में, अपने जिला स्तर में या अपने राज्य स्तर

में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। क्या आप जानते हैं कि उसकी सफलता के पीछे किन-किन लोगों का हाथ है ?

सफलता किसी एक व्यक्ति के प्रयासों के फल नहीं है। यह लोगों के निरंतर प्रयासों का फल है।

विद्यार्थी के साथ उसके अभिभावक , आस-पड़ोस, परिवेश, सभी का योगदान होता है।

सफलता में किसका कितना-कितना प्रतिशत किस अनुपात में रहा है। मेरा मानना है कि अगर कोई बच्चा शत -प्रतिशत

अंक लेकर आ रहा है तो उसके पीछे चार लोगों का हाथ है। अगर हम इसको गणितीय भाषा में समझे तो प्रथम 33%

स्वयं की मेहनत 33% माता-पिता की मेहनत, 33% उसके अध्यापकों की मेहनत और एक प्रतिशत जो बेहद जरूरी है

वह है भगवान की ओर से। इस प्रकार से हम यदि यह चारों प्रतिशत मिलाते हैं तो एक बच्चा शत प्रतिशत अंक लेकर

उत्तीर्ण होता है। इस प्रकार सफल विद्यार्थी अपना नाम और अपने माता-पिता का नाम रौशन करता है। यदि इसका

कोई भाग एक भी प्रतिशत कम रह जाता है तो वह बच्चा सफलता की ऊँचाइयों को नहीं छू पाता। शिक्षक होने के नाते

हमारा यह दायित्व है कि निरंतर निगरानी करते हुए विद्यार्थी को सफल बनाएं। आइए हम सब मिलकर विद्यार्थियों

की सफलता में अपने हिस्से का योगदान दें।

बूझिए यह पहेलियां और जानिए कितने हैं आप होशियार - प्रीति आठवीं 'ब'

- कटोरे पर कटोरा, बेटा बाप से ज्यादा गोरा।
- उत्तर: नारियल
- अंधेरे में बैठी है एक रानी, सिर पर है आग और तन में है पानी।
- उत्तर: मोमबत्ती
- काले घोड़े पर सफेद सवारी एक उतरे तो दूसरे की बारी।
- उत्तर: तवा
- बीमारी नहीं है फिर भी वह खाती है गोली हर कोई सुनकर डर जाए ऐसी है उसकी बोली।
- उत्तर: बंदूक
- वो कौन-सा पक्षी है, जिसका अंग्रेजी में मतलब ज्यादा होता है।
- उत्तर: मोर
- ऊपर भी जाती है नीचे भी जाती है पर अपने जगह से हिलती नहीं है, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- सीढ़ी
- एक सुई दरजी के हाथ में ऐसे कमाल की जो कपड़े सिलाई काम न आयी, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- हाथ घड़ी की सुई
- एक डब्बे में 13 पान जिसे कोई खा नहीं सकता, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- ताश का डब्बा
- इतनी नाजुक है ये चीज, कुछ बोलते हो टूट जाएगी, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- खामोशी
- इंसान की ऐसी चीज जो उसकी है पर इस्तेमाल पूरी दुनिया करती है, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- नाम
- जितना ज्यादा फैलता है उतना कम दिखाई देता है, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- अंधेरा
- जितना आगे बढ़ोगे उतना पीछे छोड़ते जाओगे, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- कदम
- मुझे तोड़े बिना इस्तेमाल नहीं कर पाओगे, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- अंडा
- गला है पर सर नहीं, बांहें है पर हाथ नहीं - बूझो तो जानें ?

- उत्तर :- शर्ट
- दांत हैं पर काट नहीं सकता , बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- कंधी
- जमीन में मरा दबा दो, जिन्दा होकर बहार आऊंगा, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- बीज
- बोलने के लिए इतने शब्द है पर फिर भी बोल नहीं पाता हूँ, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- किताब
- अपने जगह से चिपका रहता फिर भी पूरी दुनिया घूमता, बूझो तो जानें ?
- उत्तर :- स्टाम्प , डाक टिकट
- शहर है पर घर नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं, नदी है पर पानी नहीं, बूझो तो ज ?
- उत्तर :- नक्शा
- खाने के लिए खरीदा जाता हूँ पर कभी खाया नहीं जाता हूँ, बताओ मेरा नाम ?
- उत्तर :- प्लेट और चम्मच
- बताओ वो चीज जो ना चाहते हुए भी इंसान खाता है और फिर पछताता है ?
- उत्तर :- धोखा
- एक ऐसी चीज जिसे जितना भी खाओ पर पूरी रहती है, बताओ क्या है वो ?
- उत्तर :- पूरी
- वो क्या है जिसे सिर्फ दायें हाथ से पकड़ सकते हैं पर बायें हाथ से नहीं ?
- उत्तर :- बायाँ हाथ
- नहीं रखोगे तो टूट जाऊंगा, बताओ क्या हूँ मैं ?
- उत्तर :- वादा
- तुम्हारे बोलने पर ही बजता हूँ, पर फिर ना जानें मेरे बजने से क्यों परेशान होते हो तुम ?
- उत्तर :- अलार्म
- गले में आऊं तो खुशी दे जाऊं, खेल में आऊं तो दुखी कर जाऊं, बताओ कौन हूँ मैं ?
- उत्तर :- हार

संस्कृत अनुभाग

महान् वैज्ञानिकः डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम प्रीति – अष्टमी – अ

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुलकलाम महोदयः न केवल भारत देश विख्यातः अपितु एकः विश्वप्रसिद्धः वैज्ञानिकः अस्ति। अयं भारतं प्रति पूर्णरूपेण समर्पितः अस्ति। अयं विनम्रः सद्गुणवहार शीलः कविः च अस्ति। अयं बालेषु रिनंह्यति। भारतीय-छात्राणां विकासाय अयं सर्वदा प्रयत्नशीलः अस्ति। भारतीय-वैज्ञानिकानाम् अयं आदर्शः एवं।

डॉ ए.पी.जे कलाम महोदयस्य जन्म तमिलनाडू राज्यस्य रामेश्वरनाम्नि नगरे सामान्ये मुस्लिमपरिवारे अभवत्।

अस्य महोदयस्य पितुः नाम 'जैनलबद्दीनः मातुः च नाम 'आशियेम्मा' आसीत्।

अस्य महोदयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा 'रामेश्वरे' अभवत्। अस्य पथप्रदर्शकः एकः हिन्दू अध्यापकः आसीत्।

स्वप्रतिभया परिश्रमेण च अयं विज्ञानक्षेत्रे सफलः अभवत् ।

मम अध्यापिका -रौनक – षष्ठी - स

या सदैव आदर्श अध्यापिका,

सा एव मम अध्यापिका।

या सदैव स्नेहं ददाति।

सा एव मम अध्यापिका ॥

या ममताया : मूर्तरूपा।

सा एव मम अध्यापिका ॥

या स्वभिमानस्य प्रतिरूपा।

सा एव मम अध्यापिका ॥

या सदैव मम जीवने आदर्शः अस्ति।

सा एव मम अध्यापिका ॥

ईश्वरस्य कृपा सदैव भवेत्।

सा शान्त समा जीवन्त ॥

कार्ये आलस्यपूर्णस्य अभावः।

रोटिका.	रोटी
प्याज.	प्लाण्डुः
पूडा.	अपूपः
इमली.	तिन्तिडी
केला.	कदलीफलम्
पूरी.	पुष्कली
जलेबी.	कुण्डलिनी
दाल.	सूपम्
नींबू.	निम्बुकम्
साग.	शाकम्
बेर.	बदरीफलम्
सब्जी.	व्यञ्जनम्
ईख.	इक्षुः
ककड़ी.	कर्कटिका
दूध.	दुग्धम्
मक्खन	नवनीतम्
नारियल.	नारिकेलम्
दही.	दधि
बादाम	वातादम्
खीर	क्षीरम्
अंगूर.	द्राक्षा
आवँला	आमलकम्
नमक.	लवणम्
आम	आम्रम्
पालक	पालकम्
मिर्च	मरिचम्
अनार	दाडिमम्
आलू	आलूकम्
लड्डू.	मोदकम्
अमरूद	अमृतफलम्
शक्कर	शर्करा

सूक्तयः समृद्धि ठाकुर- अष्टमी- स

शोको नाश्यते धैर्यं, शोको नाश्यते श्रुतम् ॥१॥

शोको नाश्यते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपु :

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥२॥

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।

एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति च तारागणैरपि॥३॥

अधमा : धनमिच्छन्ति धनमानौ च मध्यमा ॥४॥

उत्तमा: मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम ।

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्॥५॥

आत्मवत् सर्वभूतेषु य : पश्यति स पण्डितः॥६॥

त्रयः वानराः- गौरवी सिंह- सप्तमी – ब

त्रयः तु वानराः एते

संयमस्य प्रेरकाः

प्रेरणाः ते हि यच्छन्ति

जनानां हितकारिकाः ॥

प्रथमः वानरः हस्तौ

स्थापयति हि ने त्रयोः।

मुद्रमेव सका पश्य

इत्यस्ति तस्य प्रेरणा ॥

तृतीयाः वानरः हस्तौ

मुखे स्थापयति निजे।

वद मित्र ! प्रियमल्पम्

इत्यस्ति तस्य प्रेरणा ॥



विभागाध्यक्षाः
श्रीमती पूजा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (संस्कृत)

ENGLISH SECTION

FAMOUS QUOTES

“Dreams are not what you see in sleep,
Dreams are those which do not let you sleep”

APJ Abdul Kalam

If you can't explain it simply, you don't understand it well enough". (Albert Einstein)

All the world's a stage, and all the men and women merely players. (William Shakespeare,)

Don't let yesterday take up too much of today. " —Will Rogers; “You learn more from failure than from success. Don't let it stop you.

RASHI VIII B

TONGUE TWISTERS

- 1) “How much wood would a woodchuck
Chuck if a woodchuck could chuck wood”.
- 2) Fuzzy Wuzzy was a bear. Fuzzy Wuzzy had no hair. Fuzzy Wuzzy wasn't very busy.”
- 3) “Betty bought butter but the butter was bitter
So Betty bought better butter to make the bitter butter better.”
- 4) “She sells seashells by the seashore.”
- 5) “A proper cup of coffee from a proper copper coffee pot.”
- 6) “Twelve twins twirled twelve twigs”.

ANJALI VIII B

GOLDEN WORDS

A little boy and his mother were crossing a river.

Mom, "Son hold my hand."

Boy, "No mom, you hold my hand."

Mom- What is the difference?

Boy – If I hold your hand and something happens to me.....

Then I may let you go but if you hold my hand

I am sure you will never let my hand go.



GURU YASHWARDHAN VI C

TREES

I think I shall never see,
A poem lovely as a tree.
A tree that looks at god all day,
And lifts her arms to pray.
Trees, they are there every day,
And under them, you can play.
They give all that they have,
They give life to human.



TANMAY LAHOT V C

EXAMINATION

Oh! My Examination.
You demand concentration.
Maths is calculation
History is civilization
Geography is population
Science is invention
English is memorization
All subjects are different
Results create a lot of tension
Feel it's a big collection
When we hear of examinations.....

PRIYA VIII B

CHIRP AND TWEETY

It was a beautiful morning
And the sun was shining in the sky
Two birds stopped to see me
When I stood in my balcony

They sang a beautiful song
Chirp chirp! Tweety Tweety! Chirp chirp
And flapped their wings in hurry
When I clapped my hands with great delight



FATHER A MOTIVATIONAL SPEAKER

My father is my life,
The one who corrects my mistakes.
Oh! Dear father, you are my motivational speaker,
You are my friend.

You are my shining star,
That shines as pure as gold,
My complete world.
You make me laugh and shower joy,
You are my friend.



HARSHAL IX C

FEAR NO MORE THE HEAT O' THE SUN

Fear no more the heat o' the sun,
Nor the furious winter's rages;
Thou thy worldly task hast done,
Home art gone, and taken thy wages:
Golden lads and girls all must,

As chimney-sweepers, come to dust.
Fear no more the frown o' the great;
Thou art past the tyrant's stroke;
Care no more to clothe and eat;
To thee the reed is as the oak:
The sceptre, learning, physic, must
All follow this, and come to dust.

Fear no more the lightning flash,
Nor the all-dreaded thunder stone;
Fear not slander, censure rash;
Thou hast finished joy

Ghost unpaid forbear thee!
Nothing will come near thee!
Quiet consummation have;
And renowned be thy grave!

SHUBHAM ANAND IX C

THE AMAZING AMAZON

The Amazon is one of Earth's two longest rivers. It stretches an incredible 6,800 kilometres (4,225 miles) west to east across South America – the approximate distance between New York and Rome. It's also the world's largest river by volume, transporting 20 per cent of the freshwater on Earth and more than the world's seven next largest rivers combined.

Feeding this gigantic torrent is the rain and snow falling across around 40 per cent of South America. This area is called the Amazon's drainage basin and is surrounded by three mountain ranges: the Andes to the west, Guiana Highlands to the south and Brazilian Highlands to the north. The Amazon Basin takes its name from the river. It is the world's largest lowland with an area of between 6-7 million square kilometres (2.3-2.7 million square miles) – almost the size of Australia. At its widest, the basin stretches 2,780 kilometres (1,725 miles) from north to south.



Around 85 per cent of the Amazon Basin is filled with the Amazon rainforest, Earth's biggest tropical forest. This densely vegetated region contains around half of the world's remaining rainforest and is sometimes called the 'lungs of the Earth'. An estimated 20 per cent of Earth's oxygen is produced by the Amazon's foliage, which draws in carbon dioxide and releases oxygen via mass-scale photosynthesis. Rainforests form in the Amazon Basin because of its equatorial climate; it lies within 15 degrees of the equator. Conditions are warm and wet year-round with little difference in weather between seasons. Incredible 473 tree species. The tallest trees can reach heights of 46 metres (150 feet) and live for thousands of years. Their huge leafy canopies harvest perhaps 70 per cent of incoming light and 80 per cent of rainfall, preventing it reaching the forest floor. When a tree topples, saplings race

upwards to fill the space. Beneath these is a shrub layer and a second forest layer – 20 metres (65 feet) tall, the height of British deciduous trees. When the trees and shrubs die, rapid leaf decay releases nutrients that fuel the ecosystem.

The Amazon Basin teems with life. More than one in ten species live in the Amazon – many found nowhere else. These include around 20 per cent of Earth's bird species, 370 reptile species, thousands of tree-dwellers, and 7,500 butterfly species compared to about 60 in the UK. Many more species remain undiscovered. An average three new plant and animal species were catalogued each day between 1999 and 2009, according to conservation group WWF. These included a four-metre (13-foot)-long snake, a bald-headed parrot and a blind crimson catfish.

The Amazon is threatened by deforestation and climate change. In the last 50 years or so, at least 17 per cent of the trees in this remote wilderness have been cleared. The rainforest is so huge that it produces around 50 per cent of its rainfall by releasing water from its leaves.

AYUSH KUMAR NEGI IX C

HEAVEN ON THE EARTH

Little drops of water,
Little grains of sand,
Make the mighty ocean,
And the pleasant land.

Little words of love
And little deeds of kindness,
Make the earth an Eden
Like the heaven above.



ABHIMANYU SHARMA IX C

WALL WITH EARS- Navya XII A

Sometimes I wish the wall had ears,
So I could talk all day without any fears.
There would've been someone who listens to me;
Without being judged, I would've cried for my plea.

Sometimes I wish the wall had eyes,
So it could see how bad I look when I cry.

I would've stared into its eyes all day long;
And looked only at them when the world feels wrong.

Sometimes I wish the wall had a mouth,
So I could sing a song with someone out loud.
We would've shouted our fears away;
And laughed together without any roles to obey.

Sometimes I wish the wall had hands,
So I could hold them when my fear expands.
It would hug me tightly whenever I'd cry;
And, holding its hands, I would walk any mile.

Sometimes I wish the wall would be my friend,
So I could play games with it that I invent.
We would tell our secrets to each other,
And it would add to my life the long-lost flavor.

My life has turned into a book without pages,
It's like I haven't laughed out loud in ages.
But it seems like nobody cares,
Whether it's your smile or your tears.

SPREAD YOUR WINGS- Hemant Sharma XII A

The world is wild, the sky is bright,
You've got wings; you were born to fly.
Don't let the cloud of doubt cover your bright sky,
Be yourself and fly high.

Mistakes will come, fears may grow,
But through the cracks, the light will flow.
Your dreams may fail sometimes, and you may think they were
crushed,
But believe me, greatness can't be rushed.

The path is tough, the road is long,
But deep inside, you are strong.
So rise and shine, don't fade away,
Be happy and proud in any way.

THE GLIDING OF PEN - Parth Kumar Pohanker (XI A)

A man held his pen and softly said,
"Do you write the words in my head?
Each story, thought, and line you trace,
Is it your work or my embrace?"

The pen replied, smooth and clear,
"I flow with the dreams you hold dear.
But it's your mind that shapes the tale,
I just help when words might fail."

The man smiled, gave it a glide,
"Together, then, let's write with pride."
And so they danced on paper white,
Creating worlds with ink and light.

THE THUNDER'S SECRET-Aman Kumar XI A

"The almighty thunder, you roar throughout the high,
Tell me what lies beyond that obscure sky."

"I can see, human, you want to know the knowledge of mine,
But a pride like that to be shared will demand an unforeseen fine.
For it's not a knowledge to be bestowed, and it shall always stay mine."

"Take whatever is mine, just name the price,
Give me that knowledge, and you can take my life."

"Seeing your resolve, I will grant this wish of yours.
I'll answer one question that your heart longs for.
But be warned, the price is divine,
For to know this knowledge, you will become a part of mine."

"If my life is a price to pay,
Then satisfy my hunger.
Tell me the origin of
The almighty thunder."

"I am the strike of Thor, the Norse god's mighty hand.
My sound comes from his chariot, my light from his hammer's stand.
Now you know my story, and soon you'll be mine,
Forever bound to the thunder, our fates intertwined."

TALKING TO THE MOON- RIYA- XIA

Each night, she whispers beneath a silver glow,
"Hello, dear Moon, how have you been?
Do you know?"
She tells her stories of the day gone by,
Of laughter and tears under the endless sky.

"I had a tough day," she says with a sigh,
"The world felt heavy; I don't know why.
I stumbled and fumbled, nothing went right,
But somehow, here with you, it all feels light."

The Moon listens, gentle and still,
Its soft light a balm for her aching will.
"Why is it, dear Moon, when you're in view,
I feel a peace as if the world is new?"

The Moon, glowing brighter, finally speaks:
"My light is ancient, calming what it seeks.
Though I watch the world turn below,
I hold the wisdom of ebb and flow."

"You face hard days, but like the tides,
Your strength returns; it never hides.
I shine for you to help you see
The peace and power that live in thee."

She smiles, the weight begins to fall away,
"Thank you, dear Moon, for showing the way."
And in that moment, as night softly blooms,
She finds her calm, talking to the Moon.

WHEN THE TREES SING - Naman- IX B

When the trees sing, everything slows down,
All the frets and concerns begin to drown.
You can hear the leaves rustling and the wind susurrating,
Which calms your soul and helps in recuperating.

When the flowers talk, everyone listens,
All the minds unite that were before riven.
It makes your heart bloom with joy,
All the faults and follies in you start to destroy.

When the sea dances, everyone smiles,
Broken hearts from the past now reconcile.
You can hear the laughter of deep serene,
Making it a "FOREVER FOR A LIFETIME" scene.

When the sky sketches, everyone stares,
Making our emotions expand in the air.
You can see the epitome of happiness in every mind,
Making us smile with our joviality combined.

When nature wants you, be right there,
As everything else is trivial, but that is rare.
Time goes by even as we speak,
And in every walk with nature, you receive far more than you seek.

A TALKING DOOR- Ishant- XI A

I knocked and asked, "May I come through?"

The door whispered, "That's up to you."

"What lies ahead? Darkness or light?"

The door replied, "The path you choose will make it bright."

"But what if I stumble? What if I fall?"

"Rise again, that's the main goal."

"Will I be welcomed? Will I still belong?"

"You will never know if you wait too long."

With my trembling hands, I turned the key,

Stepped inside, and lived happily.

Frozen Fire- Tanisha 11 A

Sky full of lighters, enjoying the destruction of calm adversaries.

All unanswered prayers, decimating his castle of memories.

Why weren't promises kept for life?

The novice is subjected to the questionnaire,

He was escaping for life,

Blissful and playful!

Revisiting the moment that kept him alive,

Had a chance to lose it all, but he didn't **connive**.

Longing for the life he almost had but couldn't contrive.

MY WISH - Nikunj - XI A

How I wish I was never born,
Never present in the lives of people I know.
How our lives have changed now!
I know that I am just a disgrace to your prodigy,
But don't you think I also deserve some sympathy?

The seed you have sown,
It has never grown.
All I wanted was your love,
But you never gave me some.
I wish our relations were better,
I wish that we weren't living like strangers.

Now, if you listen closely,
I will tell you how I feel.
Just like a flower that wants some rain,
I want to grow up once again.

ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ

PUNJABI SECTION

ਸੰਪਾਦਕ ਦੀ ਕਲਮ ਤੋਂ ✍

ਪਿਆਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸਾਥੀਓ! ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਈ-ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਅੰਕ ਲੈ ਕੇ ਹਾਜ਼ਰ ਹਾਂ | ਜਿਵੇਂ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਜਾਣਦੇ ਹੋ ਕਿ ਹਰ ਵਿਦਿਅਕ ਸੰਸਥਾ ਦਾ ਮੁੱਖ ਮਨੋਰਥ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਦਾ ਸਰਵਪੱਖੀ ਵਿਕਾਸ ਕਰਨਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਸਦੀ ਬਾਹਰੀ ਤੇ ਅੰਦਰੂਨੀ ਸਖ਼ਸ਼ੀਅਤ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵਿਕਸਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ | ਇਸ ਵਿਚ ਹੀ ਇਕ ਪੱਖ ਉਸ ਦੀਆਂ ਸਾਹਿਤਕ ਜਾਂ ਬੌਧਿਕ ਰੁਚੀਆਂ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਸ਼ਾਮਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਮਨੁੱਖ ਹੀ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਦਾ ਅਜਿਹਾ ਜੀਵ ਹੈ ਜਿਸਨੂੰ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਕਲਪਨਾ ਤੇ ਚਿੰਤਨਸ਼ੀਲਤਾ ਦਾ ਗੁਣ ਦਿੱਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਦ ਉਹ ਚਿੰਤਨ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਅੰਗ ਬਣਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸਮਝੋ ਕਿ ਉਸ ਵਿਚ ਸਾਹਿਤਕ ਤੇ ਬੌਧਿਕ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀਆਂ ਨੇ ਵਿਕਾਸ ਕਰਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ।

ਕਲਪਨਾ ਮਨੁੱਖ ਦਾ ਜਮਾਂਦਰੂ ਗੁਣ ਹੈ। ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਵਿਚ ਹਰ ਸਮੇਂ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਭਾਵ, ਵਲਵਲੇ ਜਾਂ ਜਜ਼ਬੇ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਤੇ ਜਦ ਉਹ ਆਪਣੀਆਂ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਕਾਗਜ਼ 'ਤੇ ਉਲੀਕ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਕਈ ਵਾਰ ਇਹੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਕਿਸੇ ਉੱਤਮ ਸਾਹਿਤਕ-ਕਿਰਤ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਸੋ, ਇਸ ਅੰਕ ਦਾ ਮਨੋਰਥ ਵੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੀ ਸਾਹਿਤਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਨੂੰ ਨਿਖਾਰਨਾ ਹੈ।

ਸਾਹਿਤ-ਰਚਨਾ ਦੇ ਵੀ ਆਪਣੇ ਕੁਝ ਨਿਯਮ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਰਾਹੀਂ ਜਿੱਥੇ ਸਾਡੀ ਸੁਹਜਾਤਮਿਕ ਤ੍ਰਿਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਉਥੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਤਾਂ ਹੀ ਸੰਭਵ ਹੈ ਜੇਕਰ ਰਚਨਾ ਵਿਚ ਮੌਲਿਕਤਾ ਨੂੰ ਕੇਂਦਰੀ ਸਥਾਨ ਦਿੱਤਾ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਇਹ ਮੌਲਿਕਤਾ ਤਾਂ ਹੀ ਬਰਕਰਾਰ ਰਹਿ ਸਕਦੀ ਹੈ ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਆਪਣੀ ਮਾਤ ਭਾਸ਼ਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ ਪ੍ਰਤੀ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲ ਹੋਵਾਂਗੇ | ਕੋਈ ਲਿਖਾਰੀ ਜਿੰਨੀ ਮਜ਼ਬੂਤ ਪਕੜ ਤੇ ਸਹਿਜਤਾ ਨਾਲ ਆਪਣੀ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਲਿਖ ਸਕਦਾ ਹੈ ਉਨੀ ਸਰਲਤਾ ਨਾਲ ਕਿਸੇ ਹਰ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਲਿਖ ਸਕਦਾ। ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਵਿਦਵਾਨ ਤੇ ਚਿੰਤਕ ਡਾ. ਸਤੀਸ਼ ਵਰਮਾ ਦਾ ਮੰਨਣਾ ਹੈ, 'ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਮੁੱਚੀ ਦੁਨੀਆ ਵਿਚ ਬੋਲੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਨਿੱਕੇ ਜਿਹੇ ਸੂਬੇ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਪਾਸਾਰ ਹੁਣ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆ ਵਿਚ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਦੁਨੀਆ ਦੀਆਂ ਮੰਨੀਆਂ-ਪ੍ਰਮਾਣੀਆਂ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਸਥਾਨ ਬਣਾ ਸਕਦੀ ਹੈ।'

ਸੋ, ਲੋੜ ਹੈ ਇਸ ਪ੍ਰਤਿ ਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲਤਾ ਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਦੀ ਤਾਂ ਜੋ ਜਿੱਥੇ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਰਾਹੀਂ ਸਾਡੀ ਸੱਭਿਅਤਾ ਤੇ ਅਮੀਰ ਵਿਰਸਾ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰਹੇ, ਉਥੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਵਰਤਮਾਨ ਸਮੇਂ ਦੀਆਂ ਮੁੱਖ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਅਤੇ ਸਾਹਿਤ ਤੇ ਕਲਾ ਵਿਚ ਆ ਰਹੇ ਨਿਘਾਰ ਆਦਿ ਮਸਲਿਆਂ ਸੰਬੰਧੀ ਵੀ ਕਲਮ ਦੇ ਜ਼ਰੀਏ ਆਵਾਜ਼ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕੇ।

ਅੰਤ ਵਿਚ ਮੈਂ ਉਹਨਾਂ ਸਾਰੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸਾਥੀਆਂ, ਅਧਿਆਪਕ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੀ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਅੰਕ ਦੀ ਰਚਨਾਤਮਿਕ-ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਵਿਚ ਸਹਿਯੋਗ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਦਿਆਲਿਆਂ ਨੰਬਰ -2 ਜਲੰਧਰ ਛਾਉਣੀ ਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲ ਰਵਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਅਤੇ ਡਾ. ਸੁਸ਼ੀਲ(ਪੀ. ਜੀ. ਟੀ .ਹਿੰਦੀ ਅਧਿਆਪਕ) ਜੀ ਦੀ ਵੀ ਤਹਿ ਦਿਲ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਕੰਮ ਨੂੰ ਨੇਪਰੇ ਚਾੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਮੇਰੀ ਰਹਿਨੁਮਾਈ ਕੀਤੀ। ਆਸ ਕਰਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਈ-ਮੈਗਜ਼ੀਨ ਪਾਠਕਾਂ ਦੀਆਂ ਉਮੀਦਾਂ 'ਤੇ ਖਰਾ ਉਤਰਨ ਵਿਚ ਸਫਲ ਹੋਵੇਗਾ। ਧੰਨਵਾਦ।

ਸੁਨੀਤਾ (ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਕਾ)

ਮੇਰਾ ਪੰਜਾਬ

ਇਹ ਹੈ ਅਨੇਕਾ ਰਾਜ ਪੰਜਾਬ
ਜਿਥੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਪੰਜ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦਾ ਮਿਲਾਪ
ਜਿਥੇ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਗੁਰੂ ਦੀ ਬਾਣੀ ਦਾ ਮਾਣ
ਉਹੀ ਰਾਜ ਤਾਂ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪੰਜਾਬ।
ਜਿਥੇ ਮਾਂ ਦੀ ਹੱਥਾਂ ਦੀ ਮੱਕੀ ਦੀ ਰੋਟੀ
ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਸਭ ਤੋਂ ਸਵਾਦਿਸ਼ ਆਹਾਰ
ਜੇਕਰ ਮਿਲ ਜਾਏ ਸਰਸੋਂ ਦਾ ਸਾਗ
ਦੇਸੀ ਘੀ ਦੇ ਨਾਲ ਤੇ ਬਣ ਜਾਏ ਬਾਤ
ਜਿਥੇ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਹੈ ਬਹੁਤ ਉਪਜਾਊ
ਜਿਥੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦਾਣੇ ਉਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ
ਉਹੀ ਰਾਜ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ।
ਜਿਥੇ ਖੁਸ਼ ਮਿਜ਼ਾਜ਼ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਟੋਲੀ ਪਾਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ
ਜਿਥੇ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਦਾਣੇ ਉਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਨੇ
ਜਿਥੇ ਖੂਬ ਭੰਗੜਾ ਪਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਜਿਥੇ ਮਹਿਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਉਹੀ ਰਾਜ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ।
ਜਿਥੇ ਮਹਿਮਾਨਾਂ ਨੂੰ ਭਗਵਾਨ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਜਿਥੇ ਕੋਈ ਭੁੱਖਾ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦਾ
ਜਿਥੇ ਸਾਰਿਆਂ ਨੂੰ ਭੋਜਨ ਦਿੱਤਾ ਭਰ ਮਿਲ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਉਹੀ ਰਾਜ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ।
ਜਿਥੇ ਕੁੜੀਆਂ ਦੇ ਗਿੱਧਾ ਪਾਉਣ ਨਾਲ
ਸਾਰਾ ਮਾਹੌਲ ਤਾਜ਼ਾ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਜਿਥੇ ਤੀਜ ਤੇ ਕੁੜੀਆਂ ਦਾ ਝੂਲਾ ਪਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਜਿਥੇ ਤੀਜ ਤਿਉਹਾਰਾਂ ਤੇ ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਉਹੀ ਰਾਜ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਕਹਿਲਾਉਂਦਾ ਹੈ।

ਪ੍ਰਿਅੰਕਾ 10ਵੀਂ ਏ

ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਵਿਹੜੇ ਦੇ ਰੁੱਖ ਦਾ ਪੰਛੀ ਹਾਂ,
 ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਘਰ ਦੀ ਹਰ ਖੁਸ਼ੀ ਹਾਂ।
 ਮੈਂ ਤੇਰਾ ਹਰ ਸੁਪਨਾ ਹਾਂ,
 ਮੈਂ ਦੇ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸੁਮੇਲ ਹਾਂ।
 ਮੈਂ ਮੁੰਡਾ ਨਹੀਂ ਹਾਂ ਪਰ ਮੈਂ ਇੱਕ ਮੁੰਡੇ ਵਰਗੀ ਹਾਂ,
 ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਘਰ ਦਾ ਦੀਵਾ ਨਹੀਂ ,ਪਰ ਮੈਂ ਰੋਸ਼ਨੀ ਹਾਂ।
 ਮੈਂ ਤੁਹਾਡਾ ਪਿਆਰਾ ਨਹੀਂ ਹਾਂ ਪਰ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੀ ਪਿਆਰੀ ਹਾਂ।
 ਤੇਰੇ ਘਰ ਦੇ ਰੁੱਖ ਉੱਤੇ ਬਣੇ ਆਲ੍ਹਣੇ ਵਿੱਚ ਮੈਂ ਪੰਛੀ ਹਾਂ

ਸਾਕਸ਼ੀ ਕੁਮਾਰੀ ਭਵੀ ਬੀ

ਅੱਜ ਦਾ ਪੰਜਾਬ

ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ,
 ਹੁਣ ਨਾ ਕਿਤੇ ਲੱਭਦੀਆਂ ਬੋਹੜਾ ਦੀਆਂ ਛਾਵਾਂ,
 ਵਿੱਚ ਸੱਥਾਂ ਨਾ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹੁਣ ਸਿਫਤ ਸਲਾਹਾਂ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ ।
 ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵੇਲੇ ਨਾ ਕੋਈ ਉੱਠ ਕੇ ਸੁਣਦਾ ਗੁਰੂ ਦੀ ਬਾਣੀ
 ਨਾ ਹੀ ਪੋਤੇ ਸੁਣਦੇ ਨੇ ਦਾਦੀ ਤੋਂ ਕਹਾਣੀ ,
 ਬੁੱਢੇ ਮਾਪੇ ਤਰਸਦੇ ,ਕਰਨ ਲਈ ਚਾਵਾਂ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ।
 ਹੁਣ ਨਾ ਕਿਧਰੇ ਵੇਖੀ ਮੈਂ, ਦੁੱਧ ਰਿੜਕਦੀ ਸੁਹਾਣੀ,
 ਮਾਰੇ ਵਾਜਾਂ ਚਾਚੀ ਨੂੰ ਕਿੱਲੀ ਟੰਗੀ ਮਧਾਣੀ,
 ਵੱਡੇ ਦਿਨ ਹੀ ਉੱਠਦੀਆਂ ਨੇ,ਅੱਜ ਦੀਆਂ ਮਾਵਾਂ ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ।
 ਧਰਮ ਦੇ ਨਾਂ ਤੇ ਵੰਡੀ ਜਾਂਦੇ, ਪੰਜ ਦਰਿਆਂ ਦੀ ਧਰਤੀ।
 ਗੁਰੂ ਘਰਾਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡੀਆਂ ਪਾ ਕੇ ਹੱਦ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਰਤੀ,
 ਕਿਰਤ ਕਮਾਈ ਛੱਡ ਕੇ, ਲੁੱਟਦੇ ਵਿੱਚ ਰਾਵਾਂ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ।

ਨਸ਼ਿਆਂ ਵਿੱਚ ਨੇ ਰੋਲਦੇ, ਗੱਭਰੂ ਇਹ ਜਿੰਦਗਾਨੀ।
 ਸਿਰ ਦੁਪੱਟਾ ਹੈ ਰੱਖਦੀ, ਕੋਈ ਵਿਰਲੀ ਜਨਾਨੀ,
 ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਕੋਈ ਰਹਿ ਗਿਆ ਵਿੱਚ ਭੈਣ- ਭਰਾਵਾਂ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ।
 ਨਾਮ ਦਾ ਹੋਕਾ ਦਿੱਤਾ ਸੀ, ਜੋ ਗੁਰੂਆਂ ਪੀਰਾਂ ।
 ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨੂੰ, ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਲੀਰਾਂ ਲੀਰਾਂ,
 ਮਨ ਦੁਖੀ ਹੋ ਗਿਆ ਮੇਰਾ ਕਿਵੇਂ ਮਨ ਸਮਝਾਵਾਂ।
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ,
 ਬਾਬਾ ਉਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ।

[[ਜਾਨਵੀ ੭ ਵੀਂ ਬੀ]]

ਵਿਚਾਰ

1. ਕਮਾਨ ਤੋਂ ਨਿਕਲਿਆਂ ਤੀਰ ਅਤੇ ਮੂੰਹ ਤੋਂ ਨਿਕਲੇ ਸ਼ਬਦ ਕਦੇ ਵਾਪਸ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦੇ ।
2. ਮਰਨਾ ਉਸੇ ਦਾ ਹੀ ਸਫਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜੋ ਬਾਕੀਆਂ ਨੂੰ ਮਰਨੇ ਦੀ ਜਾਚ ਸਿਖਾ ਜਾਵੇ ।

[[ਹਰਲੀਨ ਕੌਰ ੭ਵੀਂ ਬੀ]]

ਕੌਣ ਕਿੱਥੋਂ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ?

ਕਾਂ ਦਰਖਤ ਦੀਆਂ ਟਾਣੀਆਂ ਤੇ ਆਲਣਾ ਬਣਾ ਕੇ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।
 ਤੋਤਾ ਦਰਖਤ ਦੀ ਖੋੜ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ
 ਵਿਜੜਾ ਦਰਖਤ ਦੇ ਨਾਲ ਲਟਕਦੇ ਹੋਏ ਆਲਣੇ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।
 ਚੂਹਾ ਖੁੱਡ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।
 ਸ਼ੇਰ ਗੁਫਾ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।
 ਸ਼ਹਿਦ ਦੀ ਮੱਖੀ ਛੱਤਾ ਬਣਾ ਕੇ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।
 ਮੱਛੀ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ।

ਅਸੀਂ ਕਿੱਥੋਂ ਰਹਿੰਦੇ ਹਾਂ?

ਅਸੀਂ ਘਰ ਬਣਾ ਕੇ ਰਹਿੰਦੇ ਹਾਂ

[[ਪ੍ਰੀਤੀ ਕੁਮਾਰੀ ੬ਵੀਂ ਸੀ]]

ਆਓ ਰਲ-ਮਿਲ ਕੇ ਬਚਾਈਏ ਪਾਣੀ।
ਸਾਡੇ ਪੰਜ ਦਰਿਆਵਾਂ ਦਾ ਮਿੱਠਾ ਪਾਣੀ।
ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ਪਾਣੀ
ਜੇ ਨਾ ਬਚਾਇਆ ਪਾਣੀ
ਤਾਂ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਊ ਇੱਕ ਕਹਾਣੀ
ਧਰਤੀ ਦੀ ਹਰਿਆਲੀ ਨੂੰ ਸਿਜਦਾ ਪਾਣੀ
ਫਲ ਸਬਜ਼ੀਆਂ ਉਗਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਾਣੀ।
ਕੀਮਤੀ ਹੈ ਇੱਕ-ਇੱਕ ਬੂੰਦ ਪਾਣੀ
ਗੁਰੂਆਂ ਪੀਰਾਂ ਨੇ ਸਰਾਇਆ ਹੈ ਪਾਣੀ
ਜੀਵ-ਜੰਤੂ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਪਿਆਸ ਬੁਝਾਉਂਦਾ ਹੈ ਪਾਣੀ
ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਆਧਾਰ ਹੈ ਪਾਣੀ
ਜੇ ਨਾ ਬਚਾਇਆ ਅੱਜ ਅਸੀਂ ਪਾਣੀ
ਤਾਂ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਊ ਜੀਵਨ ਦੀ ਇੱਕ ਕਹਾਣੀ।

[[ਅਵਨੀਤ ਕੌਰ 6ਵੀਂ ਬੀ]]

ਮਾਂ ਮੇਰੀ

ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਹੈ ਸਭ ਤੋਂ ਚੰਗੀ,
ਰੋਜ਼ ਇਹ ਮੇਰੀ ਸੇਵਾ ਕਰਦੀ।

ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਇਹ ਸਭ ਤੋਂ ਸੋਹਣੀ,
ਬੋਲੀ ਇਸ ਦੀ ਹੈ ਮਨਮੋਹਣੀ।

ਚੰਗੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਮੈਨੂੰ ਸਿੱਖਾਉਂਦੀ,
ਚੰਗਾ ਮਨੁੱਖ ਮੈਨੂੰ ਬਣਾਉਂਦੀ।

ਮਾਂ ਮੇਰੀ ਮੈਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਂਦੀ,
ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਇਹ ਗਾਣਾ ਗਾਉਂਦੀ।

ਮੇਰੀ ਹਰ ਇੱਕ ਗੱਲ ਨੂੰ ਮਨੋ ,
ਮੈਂ ਵੀ ਉਸ ਦੀ ਗੱਲ ਨੂੰ ਮੰਨਾ
ਅਤੇ ਚੰਗਾ ਮਨੁੱਖ ਬਣਾ।

[[ਪ੍ਰੀਤੀ (3ਵੀਂ ਬੀ)]

ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ

1. ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ 'ਤੇ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰੋ-ਜ਼ੁਬਾਨ, ਆਦਤ ਅਤੇ ਗੁੱਸਾ।
2. ਤਿੰਨਾਂ ਦਾ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਆਦਰ ਕਰੋ-ਮਾਤਾ, ਪਿਤਾ ਅਤੇ ਗੁਰੂ
3. ਤਿੰਨਾਂ ਨੂੰ ਮੁਸੀਬਤ ਵਿਚ ਯਾਦ ਕਰੋ- ਪਰਮਾਤਮਾ, ਦੋਸਤ ਅਤੇ ਮੌਤ।
4. ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ ਲਈ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲੜੋ-ਇਮਾਨਦਾਰੀ, ਨਿਆਂ ਅਤੇ ਆਜ਼ਾਦੀ।
5. ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਕਦੇ ਨਾ ਭੁੱਲੋ-ਉਪਕਾਰ, ਦਇਆ ਅਤੇ ਸਲਾਹ
6. ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਇਕ ਵਾਰ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ- ਮਾਤਾ-ਪਿਤਾ ਅਤੇ ਜਵਾਨੀ
7. ਤਿੰਨ ਚੀਜ਼ਾਂ ਤੋਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਬਚੋ- ਭੈੜੀ ਸੰਗਤ, ਸਵਾਰਥ ਅਤੇ ਨੀਂਦ |

ਪਰਮਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ 10ਵੀਂ ਅ

ਜੋ ਕਿਉਂ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ

ਅੱਜ ਦੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਜੋ ਕੁਝ ਵੀ ਧੀਆਂ ਨਾਲ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ ਮੈਂ ਉਸ ਬਾਰੇ ਲਿਖ ਰਹੀ ਹਾਂ। ਧੀਆਂ ਵਿਚਾਰੀਆਂ ਬਿਨਾ ਚਾਹੇ ਜੰਮਦੀਆਂ ਤੇ ਬਿਨਾਂ ਅਫਸੋਸ ਮਰ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਸਾਡੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਧੀਆਂ ਦਾ ਪੈਦਾ ਹੋਣਾ ਕਈ ਮਾਣ ਦੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਸਮਝੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜੋ ਕਈ ਧੀ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਸਾਰਿਆਂ ਦੇ ਚਿਹਰੇ ਦੁੱਖ ਨਾਲ ਲਟਕ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਕਈ ਘਰਾਂ ਵਿਚ ਧੀ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਦਾ ਸੋਗ ਮਨਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਤਾਂ ਸਾਇੰਸ ਨੇ ਏਨੀ ਤਰੱਕੀ ਕਰ ਲਈ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਅਜਿਹੀਆਂ ਮਸ਼ੀਨਾਂ ਮੌਜੂਦ ਹਨ ਜੋ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਵਾਲਾ ਬੱਚਾ ਲੜਕਾ ਹੈ ਜਾਂ ਲੜਕੀ ਅਤੇ ਜੇਕਰ ਉਹ ਬੱਚਾ ਲੜਕੀ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਉਸਨੂੰ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹੀ ਮੌਤ ਦੇ ਮੂੰਹ ਵਿਚ ਧਕੇਲ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਖਿਰ ਇਹ ਨਫਰਤ ਧੀਆਂ ਲਈ ਹੀ ਕਿਉਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ? ਜਦਕਿ ਦੂਜੇ ਪਾਸੇ ਜਦੋਂ ਲੜਕਾ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਲੱਭੂ ਵੰਡੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਲੱਖਾਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਮਨਾਈਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਪਰੰਤੂ ਧੀ ਜੰਮਣ ਵੇਲੇ ਚਾਹੇ ਪਾਸੇ ਸੋਗ ਦੇ ਫੁਹਾਰੇ ਛੁੱਟ ਪੈਂਦੇ ਹਨ। ਅਗਰ ਧੀਆਂ ਏਨੀਆਂ ਹੀ ਮਾੜੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਤਾਂ ਸਹੁਰੇ ਘਰ ਭੇਜਣ ਸਮੇਂ ਇਹ ਲੋਕ ਧਾਹਾਂ ਕਿਉਂ ਮਾਰਦੇ ਹਨ। ਏਨੀ ਨਫਰਤ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਵੀ ਧੀਆਂ ਆਪਣੇ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਦਾ ਖਿਆਲ ਰੱਖਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਹਰ ਕੰਮ ਕਾਜ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਮਾਂ ਦਾ ਹੱਥ ਵਟਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ, ਜਦਕਿ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਪੁੱਤਰ ਬਚਾਪੇ ਵਿਚ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਨੂੰ ਧੌਕਿਆਂ ਤੋਂ ਸਿਵਾ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੇ। ਫਰਕ ਸਿਰਫ ਸਮਝਣ ਦਾ ਹੈ ਧੀਆਂ ਕਿਸੇ ਗੱਲੇ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਘੱਟ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀਆਂ, ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਕੋਈ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਖੇਤਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜਿਥੇ ਲੜਕੀਆਂ ਕੰਮ ਨਾ ਕਰਦੀਆਂ ਹੋਣ, ਅੱਜ ਲੜਕੀਆਂ ਲੜਕੀਆਂ ਨਾਲੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਤਰੱਕੀ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਪੜ੍ਹਾਈ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਵੀ ਵੇਖ ਲਵੋ ਅੱਜ ਲੜਕੀਆਂ ਲੜਕੀਆਂ ਨਾਲੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪੜ੍ਹਦੀਆਂ ਹਨ, ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਲੈਵਲ ਨੂੰ ਪਰਖਣ ਤੇ ਹੀ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਲੜਕੀਆਂ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਮੈਰਿਟ ਵਿਚ ਹੋਣਗੀਆਂ। ਇਹ ਸਭ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦਾ ਸਦਕਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਤੁਸੀਂ ਹੀ ਦੱਸੋ ਕਿ ਕੀ ਕਮੀ ਹੈ ਇਹਨਾਂ ਧੀਆਂ ਵਿਚ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੇ ਅਫਸੋਸ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਧੀਆਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਦੇਖੀਏ ਤਾਂ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਕਿੰਨਾ ਮੁਸ਼ਕਲਾਂ ਨਾਲ ਭਰਪੂਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਕਿਵੇਂ ਉਹ ਮੇਢੇ ਨਾਲ ਮੇਢਾ ਜੋੜ ਕੇ ਹਰ ਕੰਮ ਕਾਜ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਮਾਪਿਆਂ ਦਾ ਹੱਥ ਵਟਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਕਟਾਈ ਤੇ ਗਹਾਈ ਦੇ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਉਦ ਕੜਕਦੀ ਦੁਪਹਿਰੇ ਮੂੰਹ ਤੇ ਪਸੀਨਾ ਚੋਦਾਂ ਤੇ ਝੁਲਸੀ ਹੋਈ ਹਾਲਤ ਵਿਚ ਖੇਤਾਂ ਵਿਚ ਰੋਟੀ ਪਾਣੀ ਲੈ ਕੇ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ ਸੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀਆਂ। ਇਹਨਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੇ ਸ਼ਾਇਦ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਕਰਨ ਦੀ ਬਹੁਤ ਸ਼ਕਤੀ ਭਰੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਆਮ ਕਹਾਵਤ ਹੈ ਕਿ ਲੜਕੀਆਂ ਪਰਾਇਆ ਧੰਨ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਪ੍ਰੰਤੂ ਇਹ ਪਰਾਇਆ ਧੰਨ

ਜੇਕਰ ਆਪਣੇ ਮਾਲਕ ਦੇ ਘਰ ਪਹੁੰਚ ਵੀ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਥੇ ਵੀ ਉਸ ਨਾਲ ਕੋਈ ਚੰਗਾ ਸਲੂਕ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ। ਬਚਪਨ ਤੋਂ ਹੀ ਦੁਖਿਆਰੀ ਧੀ ਨੂੰ ਸਹੁਰੇ ਘਰ ਵੀ ਕੋਈ ਪਿਆਰ ਦੁਲਾਰ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦਾ ਬਲਕਿ ਉਸ ਉਤੇ ਜ਼ੁਲਮ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਧੀਆਂ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਖ਼ਤਮ ਕਰਨ ਲਈ ਕਦਮ ਉਠਾ ਲੈਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਧੀਆਂ ਦੀ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਹਾਲਤ ਨੂੰ ਵੇਖ ਕੇ ਤਾਂ ਨੂੰ ਕੰਡੇ ਖੜੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਕੀ ਧੀ ਏਨੀ ਹੀ ਮਾੜੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਪੈਦਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਤੇ ਜੇ ਵਿਚਾਰੀ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਤਾਂ ਸਮਾਜ ਵਲੋਂ ਉਸਨੂੰ ਠੁਕਰਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਕੀ ਪਤਾ ਕਿ ਕੱਲ ਨੂੰ ਇਹ ਧੀ ਆਪਣੇ ਮਾਂ-ਬਾਪ ਦੇ ਬੁਢਾਪੇ ਦਾ ਸਹਾਰਾ ਬਣੇ। ਮੈਂ ਤਾਂ ਇਹੀ ਕਹਿਣਾ ਚਹਾਂਗੀ ਕਿ ਪੁੱਤਰ ਹੋਵੇ ਜਾਂ ਧੀ ਉਹ ਤੁਹਾਡਾ ਆਪਣਾ ਹੀ ਖੂਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਵੀ ਅਜਿਹਾ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ ਜੋ ਲੜਕੀਆਂ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ। ਡਾਕਟਰ, ਇੰਜੀਨੀਅਰ, ਵਕੀਲ, ਅਧਿਆਪਕ, ਪਾਇਲਟ, ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਅਹੁਦਿਆਂ ਤੇ ਇਹੀ ਧੀਆਂ ਹੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਪੁੱਤਰਾਂ ਨਾਲੋਂ ਅੱਗੇ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਲੜਕੇ ਤੇ ਲੜਕੀ ਵਿਚ ਕੋਈ ਫ਼ਰਕ ਨਹੀਂ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਲੜਕੀ ਨੂੰ ਵੀ ਉਨੀ ਅਹਿਮੀਅਤ ਦਿੱਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਜਿੰਨੀ ਕੁ ਲੜਕੇ ਨੂੰ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਲੜਕੀ ਦੇ ਪੈਦਾ ਹੋਣ ਤੇ ਵੀ ਮਾਣ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਔਰਤ ਨੂੰ ਤਾਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿਚ ਵਡਿਆਇਆ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਦੇ ਆਦਰ ਵਿਚ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਸੋ ਕਿਉਂ ਮੰਦਾ ਆਖੀਐ ਜਿਤੁ ਜੰਮਹਿ ਰਾਜਾਨ ॥

ਸੁਨੀਤਾ (ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਕਾ)

ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ

ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜ਼ਮੀਨ ਪੁੱਟਣ ਤੋਂ ਉਸ ਵਿਚੋਂ ਪਾਣੀ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਨਾਲ ਵਿੱਦਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਗਿਆਨ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਸੀਂ ਖੂਹ ਪੁੱਟਣ ਲਈ ਮਿਹਨਤ ਕਰਦੇ ਹਾਂ। ਗੁਰੂ ਦੀ ਸੇਵਾ ਬਿਨਾਂ ਕੋਈ ਵੀ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਪ੍ਰਾਪਤ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ। ਗੁਰੂ ਗਿਆਨ ਦਾ ਸੋਮਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਗਿਆਨ ਹੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਕਿ ਸਾਡੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸਾਰੇ ਅੰਧ-ਵਿਸ਼ਵਾਸੀ ਹਨੇਰਿਆਂ ਨੂੰ ਦੂਰ ਕਰਦਾ ਹੈ ।

ਜਿਸ ਵਿਅਕਤੀ ਤੋਂ ਅਸੀਂ ਇਕ ਵੀ ਅੱਖਰ ਗਿਆਨ ਦਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਉਸਨੂੰ ਹੀ ਗੁਰੂ ਮੰਨ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਲੋਕ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਭੁੱਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਜੋ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਹੀਂ ਕਰਦੇ। ਗੁਰੂ ਮਹਾਨ ਹੈ । ਗੁਰੂ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਗਿਆਨ ਨਹੀਂ, ਗਿਆਨ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਇਨਸਾਨ ਨਹੀਂ।

ਗੁਰੂ ਦੇ ਬਿਨਾਂ ਇਹਨਾਂ ਦੁਨਿਆਵੀ ਬੰਧਨਾਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੀ। ਗੁਰੂ ਇਸ ਹਨੇਰੇ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਦੀਵੇ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੈ ਜੋ ਭਟਕਦੇ ਹੋਏ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਸਹੀ ਰਸਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ । ਗੁਰੂ ਹੀ ਕਿਰਪਾ ਦਾ ਸਾਗਰ ਹੁੰਦਾ ਜਿਸਦਾ ਜਲ ਕਦੀ ਖ਼ਤਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

ਸੁਨੀਤਾ (ਟੀ.ਜੀ.ਟੀ. ਪੰਜਾਬੀ ਅਧਿਆਪਕਾ)

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਰੰਗ

ਇੱਕ ਦਿਨ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਕਮਰੇ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਕੇ ਇੱਕ ਪੰਛੀ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾ ਰਹੀ ਸੀ ਅਚਾਨਕ ਉਸ ਤਸਵੀਰ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਮੇਰੇ ਮਨ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਖਿਆਲ ਆਇਆ ਕਿਉਂ ਨਾ ਕੱਲ ਮੈਂ ਇੱਕ ਪੰਛੀ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਪਾਵਾਂ ਫਿਰ ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਇੱਕ ਛੋਟੀ ਚਿੜੀ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਆਈ ਮੈਨੂੰ ਉਹ ਬਹੁਤ ਪਿਆਰੀ ਲੱਗੀ ਮੈਂ ਜਿੱਥੇ ਜਾਂਦੀ ਉਹ ਮੇਰੇ ਪਿੱਛੇ-ਪਿੱਛੇ ਆਉਂਦੀ ਸੀ ਮੈਂ ਸੋਚਿਆ ਇਹ ਮੇਰੇ ਵਾਰ-ਵਾਰ ਮਗਰ ਕਿਉਂ ਆ ਰਹੀ ਹੈ ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਮੈਂ ਉੱਠੀ ਉਹ ਮੇਰੇ ਕਮਰੇ ਵਿੱਚ ਆ ਗਈ। ਮੈਂ ਉਸ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਹੈਰਾਨ ਰਹਿ ਗਈ ਮੈਂ ਖਿੜਕੀ ਖੋਲੀ ਤੇ ਉਹ ਤਾਂ ਵੀ ਨਾ ਗਈ ਮੈਂ ਸੋਚਿਆ ਉਹ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਆਪਣੇ ਮੇਜ਼ ਤੇ ਬੈਠ ਕੇ ਪੰਛੀ ਦੀ ਤਸਵੀਰ ਬਣਾਉਣੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਮੈਨੂੰ ਫਿਰ ਯਾਦ ਆਇਆ ਕਿ ਮੈਂ ਇੱਕ ਪੰਛੀ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਪਾਉਣੀ ਸੀ ਮੈਂ ਉਸ ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਰੋਟੀ ਪਾਈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਰੋਜ਼ ਹੁੰਦਾ ਰਿਹਾ ਜਦੋਂ ਉਹ ਚਿੜੀ ਆਉਂਦੀ ਤਾਂ ਮੈਂ ਉਸਨੂੰ ਰੋਟੀ ਪਾਉਂਦੀ ਇੱਕ ਦਿਨ ਮੈਂ ਉਸ ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਕੋਠੇ ਉੱਤੇ ਰੋਟੀ ਪਾਉਂਦੀ ਪਈ ਸੀ ਜਿੱਦਾਂ ਹੀ ਚਿੜੀ ਨੇ ਮੂੰਹ ਵਿੱਚ ਰੋਟੀ ਪਾਈ ਤੇ ਉਸੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਕਬੂਤਰ ਉਸ ਦੀ ਰੋਟੀ ਖੋਣ ਲੱਗ ਪਏ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਉਡਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਪਰ ਚਿੜੀ ਉੱਡ ਜਾਂਦੀ ਤੇ ਫਿਰ ਵਾਪਸ ਆ ਜਾਂਦੀ। ਇੱਕਲੀ ਚਿੜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਰੋਟੀ ਲਈ ਬਹੁਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ। ਮੈਂ ਚਿੜੀ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਬਹੁਤ ਹੈਰਾਨ ਸੀ । ਚਿੜੀ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਸੀ । ਮੈਨੂੰ ਇਹ ਸਬਕ ਮਿਲਿਆ ਆਪਣੇ ਹੱਕ ਦੇ ਲਈ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲੜੋ ਭਲੇ ਹੀ ਤੁਸੀਂ ਕਿੰਨੇ ਵੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਕਿਉਂ ਨਾ ਹੋਵੋ।

ਰੀਤ 7ਵੀਂ ਅ

ਹਰੀ ਸਿੰਘ ਨਲੂਆ

ਸਰਦਾਰ ਹਰੀ ਸਿੰਘ ਨਲੂਆ ਸਿੱਖ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਯੋਧਾਂ ਤੇ ਜਰਨੈਲ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਮਹਾਨ ਜਰਨੈਲ ਦਾ ਜਨਮ **1791** ਈਸਵੀ ਵਿੱਚ ਸਰਦਾਰ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਗੁਜਰਾਂਵਾਲਾ ਵਿਖੇ ਹੋਇਆ। ਇਹ ਹੋਣਹਾਰ ਬਾਲਕ ਸਿਰਫ ਸੱਤ ਸਾਲਾਂ ਦਾ ਸੀ ਕਿ ਇਸ ਦੇ ਸਿਰ ਤੋਂ ਪਿਤਾ ਦਾ ਸਾਇਆ ਉੱਠ ਗਿਆ। ਇੱਕ ਵਾਰ ਉਹ ਅਤੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੰਘ ਇੱਕ ਜੰਗਲ ਵਿੱਚੋਂ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਕਰ ਰਹੇ ਸਨ ਇੱਕ ਸ਼ੇਰ ਨੇ ਮਹਾਰਾਜੇ ਦੇ ਘੋੜੇ ਉੱਤੇ ਅਚਾਨਕ ਹਮਲਾ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਮਹਾਰਾਜੇ ਨੂੰ ਹਮਲੇ ਤੋਂ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਹਰੀ ਸਿੰਘ ਨੇ ਛਾਲ ਮਾਰ ਕੇ ਸ਼ੇਰ ਦਾ ਸਿਰ ਫੜ ਲਿਆ ਅਤੇ ਨੰਗੇ ਹੱਥੀ ਉਸਦੇ ਜਬਾੜੇ ਫਾੜ ਦਿੱਤੇ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਹਰੀ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਂ ਦੇ ਪਿੱਛੇ 'ਨਲੂਆ' ਲਾਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਿਆ। ਅਫਗਾਨਿਸਤਾਨ ਦੇ ਦੋਸਤ ਮੁਹੰਮਦ ਖਾਨ ਦੀਆਂ ਫੌਜਾਂ ਨਾਲ ਲੜਦਿਆਂ ਹਰੀ ਸਿੰਘ ਨਲੂਆ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜ਼ਖਮੀ ਹੋ ਗਏ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਮੌਤ **30** ਅਪ੍ਰੈਲ **1837** ਈਸਵੀ ਨੂੰ ਜਮਰੌਦ ਵਿੱਚ ਹੋ ਗਈ।

[[ਤੇਗ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸਿੰਘ 10 ਵੀਂ ਏ]]

30 ਰੁਪਏ

ਪਰਵੀਨ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਗਰੀਬ ਕਿਸਾਨ ਸੀ। ਉਹ ਇਕੱਲਾ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਾ ਸੀ। ਉਹਦੇ ਕੋਲ ਇੱਕ ਛੋਟਾ ਖੇਤ ਸੀ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਹ ਕਪਾਹ ਦੀ ਖੇਤੀ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਇੱਕ ਸ਼ਾਮ ਜਦੋਂ ਆਪਣੇ ਘਰ ਵਿੱਚ ਬੈਠ ਕੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਾਂ ਨੂੰ ਵੇਖ ਰਿਹਾ ਸੀ ਤਾਂ ਅਚਾਨਕ ਬਹੁਤ ਤੇਜ਼ ਬਾਰਿਸ਼ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਈ ਅਤੇ ਉਹ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਪਰ ਦੇਖਦੇ ਹੀ ਦੇਖਦੇ ਬਾਰਿਸ਼ ਨੇ ਬਹੁਤ ਭਿਆਨਕ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰ ਲਿਆ। ਜਿਸ ਕਰਕੇ ਉਸ ਦੀ ਫਸਲ ਖਰਾਬ ਹੋ ਗਈ ਉਹਦੇ ਕੋਲ ਪੈਸੇ ਕਮਾਉਣ ਦਾ ਕੋਈ ਹੋਰ ਸਾਧਨ ਨਹੀਂ ਸੀ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਉਹਦੇ ਕੋਲ ਜਮਾਂ ਪੂੰਜੀ ਸੀ। ਪਰਵੀਨ ਭਗਵਾਨ ਨੂੰ ਬਹੁਤ ਮੰਨਦਾ ਸੀ ਅਤੇ ਉਹ ਸੋਚਦਾ ਸੀ ਕਿ ਹੁਣ ਮੇਰੀ ਮਦਦ ਸਿਰਫ ਭਗਵਾਨ ਹੀ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਸਵੇਰੇ ਉੱਠ ਕੇ ਉਹ ਭਗਵਾਨ ਨੂੰ ਇੱਕ ਪੱਤਰ ਲਿਖਦਾ ਹੈ ਤੇ ਆਪਣੀ ਸਾਰੀ ਮਜ਼ਬੂਰੀ ਉਸ ਪੱਤਰ ਵਿੱਚ ਲਿਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਨੁਕਸਾਨ ਦੀ ਭਰਪਾਈ ਲਈ ਭਗਵਾਨ ਤੋਂ **100** ਰੁਪਏ ਹਰਜਾਨੇ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਮੰਗਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਸ ਪੱਤਰ ਨੂੰ ਪੋਸਟ ਆਫਿਸ ਦੇ ਡਿੱਬੇ ਵਿੱਚ ਪਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਦੋਂ ਉਹ ਪੱਤਰ ਡਾਕੀਏ ਦੇ ਹੱਥ ਲੱਗਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਬਹੁਤ ਹੱਸਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪ੍ਰਵੀਨ ਦਾ ਮਜ਼ਾਕ ਉਡਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਫਿਰ ਉਹ ਪੱਤਰ ਪੋਸਟ ਮਾਸਟਰ ਨੂੰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪੋਸਟ ਮਾਸਟਰ ਵੀ ਹੱਸਦਾ ਹੈ ਪਰ ਉਹ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਕਿ ਜੇ ਪਰਵੀਨ ਨੂੰ ਪੈਸੇ ਨਾ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਉਹਦਾ ਭਗਵਾਨ ਤੋਂ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਖਤਮ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਪੋਸਟ ਮਾਸਟਰ ਪੈਸੇ ਇਕੱਠੇ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਪਰਵੀਨ ਨੂੰ ਪੈਸੇ ਭਗਵਾਨ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ ਭੇਜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਪ੍ਰਵੀਨ ਪੱਤਰ ਵੇਖਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਤੇ ਜਦੋਂ ਉਹ ਪੱਤਰ ਨੂੰ ਖੋਲਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਸ ਦੇ ਵਿੱਚ ਸਿਰਫ **70** ਰੁਪਏ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਵੇਖ ਕੇ ਉਹ ਬਹੁਤ ਹੈਰਾਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਤੇ ਸੋਚਦਾ ਹੈ ਕਿ ਭਗਵਾਨ ਨੇ ਤਾਂ **100** ਰੁਪਏ ਹੀ ਭੇਜੇ ਹੋਣੇ ਆ ਪਰ ਵਿੱਚੋਂ **30** ਰੁਪਏ ਪੋਸਟ ਮਾਸਟਰ ਨੇ ਚੋਰੀ ਕਰ ਲਏ ਹਨ।

ਉਸਦੇ ਬਾਅਦ ਉਹ ਭਗਵਾਨ ਨੂੰ ਇੱਕ ਹੋਰ ਪੱਤਰ ਲਿਖਦਾ ਹੈ ਤੇ **30** ਰੁਪਏ ਹੋਰ ਮੰਗਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਉਹ ਪੋਸਟ ਮਾਸਟਰ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਥਾਣੇ ਵਿੱਚ ਦਰਜ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

[[ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਮਟੂ 10 ਵੀਂ ਏ]]

ਲੇਖ - ਝੰਡਾ

ਭਾਰਤ ਦਾ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਝੰਡਾ ਤਿਰੰਗਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਤਿਰੰਗਾ ਕੇਸਰੀ, ਚਿੱਟੇ ਅਤੇ ਹਰੇ ਰੰਗਾਂ ਦਾ ਬਣਿਆ ਹੈ। ਤਿਰੰਗੇ ਦਾ ਸਿਖਰ ਕੇਸਰੀ ਹੈ, ਜੋ ਹਿੰਮਤ, ਬਹਾਦਰੀ ਅਤੇ ਕੁਬਾਨੀ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਵਿੱਚਲਾ ਰੰਗ ਚਿੱਟਾ ਰੰਗ ਹੈ ਜੋ ਸ਼ਾਂਤੀ, ਸ਼ੁੱਧਤਾ ਅਤੇ ਸੱਚਾਈ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਹੇਠਾਂ ਹਰਾ ਰੰਗ ਹੈ ਜੋ ਖੁਸ਼ੀ, ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਅਤੇ ਵਿਕਾਸ ਨੂੰ ਦਰਸਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਝੰਡੇ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਇੱਕ ਚੱਕਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿੱਚ **24** ਲਾਈਨਾਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ, ਇਸ ਨੂੰ ਅਸ਼ੋਕ ਚੱਕਰ ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਚੱਕਰ ਸਾਨੂੰ ਨਿਰੰਤਰ ਰਫਤਾਰ ਨਾਲ ਚਲਦੇ ਰਹਿਣ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਤਿਰੰਗੇ ਦਾ ਆਕਾਰ ਆਇਤਾਕਾਰ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਿਸਦੀ ਲੰਬਾਈ ਅਤੇ ਚੌੜਾਈ **3:2** ਦੇ ਅਨੁਪਾਤ ਵਿੱਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਸ਼ੋਕ ਦੇ ਸਮੇਂ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਝੰਡਾ ਅੱਧਾ ਝੁਕਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਹਰ ਨਾਗਰਿਕ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਬਣਦਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਝੰਡੇ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰੇ ਅਤੇ ਇਸ ਤੋਂ ਅੱਗੇ ਵਧਣ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੇ।

[[ਸਾਕਸ਼ੀ ਕੁਮਾਰੀ (3ਵੀਂ ਬੀ)

ਵਿਚਾਰ

ਚੰਗੀ ਸੋਚ ਬੰਦੇ ਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਚੰਗਾ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਚੰਗੀ ਸੋਚ ਦੇ ਮਾਲਕ ਬਣੋ।

ਜੇ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਗੁਜ਼ਰ ਰਹੇ ਹੋ ਤਾਂ ਹੌਸਲਾ ਰੱਖੋ ਇਹ ਮੁਸ਼ਕਿਲਾਂ ਇੱਕ ਦਿਨ ਬੜਾ ਸੁੱਖ ਦੇਣਗੀਆਂ।

[[ਗਵਲੀਨ 7ਵੀਂ ਬੀ]]

विद्यालय गतिविधि छायाचित्र













पुस्तकालय गतिविधियाँ



पृथ्वी दिवस



विज्ञान प्रतियोगिताएं



अंतर्राष्ट्रीय योग-दिवस



अंतर्राष्ट्रीय नशा रोधी अभियान



चित्रकला गतिविधियाँ









India
Gate

सशस्त्र सेना झंडा दिवस

SAMRIDHI THAKUR
VIII - C

INDIAN ARMED
FORCES FLAG DAY



आज़ादी का अमृत महोत्सव

AZADI KA AMRIT MAHOTSAV



राष्ट्रीय एकता पर्व- एक भारत श्रेष्ठ भारत



फिट इंडिया 4.0 FIT INDIA 4.0





विद्या प्रवेश



स्वच्छ भारत अभियान



PM SHRI Unfolds the World: Taking Learning Beyond the Classroom

शैक्षिक भ्रमण



A Fascinating Tour of LPU's Agricultural Polyhouse



राष्ट्रीय गणित दिवस



स्थापना दिवस



भारतीय भाषा उत्सव



संविधान दिवस गतिविधि



स्वतंत्रता दिवस



पुरस्कार वितरण





शैक्षिक भ्रमण





वज्रा पुस्तकालय भ्रमण







ਧ੍ਵਜ ਦਿਵਸ



युवा दिवस



दादा-दादी दिवस Grand Parent day





एन०सी०सी० गतिविधियाँ



















हर सबक के लिए सबक

सक्षम पंजाब

PUNHIN01933-TC



भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हिंदी समाचार पत्र, मुख्य संपादक केवल कृष्ण, 98884-72903, 70091-30672

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 2, जालंधर छावनी ने परीक्षा के दौरान मानसिक तनाव को प्रबंधित करने पर विशेषज्ञ वार्ता का किया आयोजन



केवल कृष्ण

जालंधर छावनी, 20 नवंबर 2024 झ जैसे-जैसे कक्षा और कक के छात्र अपने प्री-बोर्ड और बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 2, जालंधर छावनी ने छात्रों द्वारा सामना किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक झ परीक्षा के दौरान मानसिक तनाव को प्रबंधित करने के लिए एक सक्रिय कदम उठाया। विद्यालय के बोर्ड परीक्षार्थियों के लिए परीक्षा के दौरान मानसिक तनाव से निपटने की रणनीतियाँ विषय पर एक

व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह व्याख्यान डॉ. अमीषा, चिकित्सक विशेषज्ञ, द्वारा दिया गया। इस सत्र ने छात्रों को चिंता प्रबंधन, ध्यान केंद्रित करने और इस महत्वपूर्ण चरण के दौरान अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रदान की।

प्रधानाचार्य श्री रविंदर कुमार के प्रेरणादायक नेतृत्व और उप-प्रधानाचार्य श्री उग्र मोहन यादव के महत्वपूर्ण समर्थन के तहत यह कार्यक्रम सहजता से आयोजित किया गया।



डॉ. अमीषा का व्याख्यान छात्रों के साथ बहुत प्रभावी साबित हुआ। उन्होंने समय प्रबंधन, विश्राम तकनीकों और परीक्षाओं के दौरान एक संतुलित दिनचर्या बनाए रखने पर मूल्यवान सुझाव साझा किए। उनके संवादात्मक दृष्टिकोण ने छात्रों को अपनी चिंताओं को खुलकर साझा करने और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे सत्र अत्यधिक आकर्षक और प्रभावशाली बन गया।

कार्यक्रम का समापन स्कूल के वरिष्ठ शिक्षक श्री अमित शर्मा

द्वारा एक हार्दिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उन्होंने डॉ. अमीषा को उनके मूल्यवान समय और विशेषज्ञता के लिए धन्यवाद दिया और कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रधानाचार्य, उप-प्रधानाचार्य और आयोजन टीम के प्रयासों की सराहना की। यह पहल स्कूल की इस प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है कि वह अपने छात्रों को न केवल अकादमिक बल्कि भावनात्मक रूप से भी समर्थन प्रदान करे, ताकि वे आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकें।



हर सबक के लिए सबक

सक्षम पंजाब

PUNHIN01933-TC



भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हिंदी समाचार पत्र, मुख्य संपादक केवल कृष्ण, 98884-72903, 70091-30672

पीएम श्री के. वि. 2 जालंधर कैंट में हरित विद्यालय पर कार्यशाला का आयोजन



केवल कृष्ण

जालंधर : पीएम श्री के वि. 2 जालंधर कैंट में पीएम श्री योजना के तहत हरित विद्यालय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्राचार्य श्री रविंदर कुमार ने अतिथि वक्ता डॉ. सुरुचि जिन्दल (एसोसिएट प्रोफेसर बायो इंजीनियरिंग विभाग, लवली प्रोफेशनल युनिवर्सिटी) का स्वागत करके विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण से जुड़ने की

अपील की।

डॉ. सुरुचि जिन्दल ने अपने वक्तव्य में हरित विद्यालय के सहज उपाय बताते हुए, ईको फ्रेंडली ढंग से विद्यालय में नए मॉडल बनाने के तरीके बताए। श्रीमती जिन्दल ने अपने पर्यावरण से जोड़ते हुए पर्यावरण और समाज के संबंधों को सरल उदाहरणों से समझाया।

श्रीमती जिन्दल ने अपने अनुभवों से विद्यार्थियों को पर्यावरण मित्र बनकर अपनी



सक्रिय भूमिका निभाने की भी अपील की। विद्यार्थियों ने वक्तव्य सुनकर अपने प्रश्न भी पूछे।

उपप्राचार्य श्री उग्रमोहन यादव ने वक्तव्य को अनुकरणीय बताया। ईको क्लब प्रभारी श्रीमती मीना गोयल ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया। हरित विद्यालय में सक्रिय भूमिका निभाने, पेड़ लगाने और उनकी निरंतर देखभाल की अपील के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।



हर खबर के लिए सख्त

सक्षम पंजाब

PUNHIN01933-TC



भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हिंदी समाचार पत्र, मुख्य संपादक केवल कृष्ण, 98884-72903, 70091-30672

पीएम श्री के वि 2 जालंधर कैंट में हरित विद्यालय पर विशेष वक्तव्य का आयोजन



केवल कृष्ण
जालंधर : पीएम श्री के वि 2 जालंधर कैंट में पीएम श्री योजना के तहत हरित विद्यालय पर विशेष वक्तव्य का आयोजन किया गया। प्राचार्य श्री रविंदर कुमार ने अतिथि वक्ता डॉ अंजना भाटिया, (एसोसिएट प्रोफेसर बॉटनी विभाग, हर्सराज महिला विद्यालय

जालंधर) का स्वागत करके विद्यार्थियों को अपने पर्यावरण से जुड़ने की अपील की।

डॉ भाटिया ने अपने वक्तव्य में हरित विद्यालय के सहज उपाय बताते हुए विद्यार्थियों सहज ढंग से बेकार जैविक पदार्थों का खाद के रूप में सदुपयोग करने के तरीके बताए। श्रीमती भाटिया ने अपने



पर्यावरण से जोड़ते हुए पर्यावरण और समाज के संबंधों को सरल उदाहरणों से समझाया। श्रीमती भाटिया ने अपने अनुभवों से विद्यार्थियों को हरित विद्यालय में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने की भी अपील की। विद्यार्थियों ने वक्तव्य सुनकर अपने प्रश्न भी

पूछे।

उपप्राचार्य श्री उग्रमोहन यादव ने वक्तव्य को अनुकरणीय बताया। अंग्रेजी प्रवक्ता डॉ रंजन बाला ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया। हरित विद्यालय में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।



हर खबर के लिए सख्त

सक्षम पंजाब

PUNHIN01933-TC



भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हिंदी समाचार पत्र, मुख्य संपादक केवल कृष्ण, 98884-72903, 70091-30672

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 जालंधर छावनी में हुआ संकुल स्तरीय राष्ट्रीय एकता पर्व का उद्घाटन



केवल कृष्ण
जालंधर छावनी : केन्द्रीय विद्यालय संगठन चंडीगढ़ के दो दिवसीय संकुल स्तरीय राष्ट्रीय एकता पर्व का आयोजन पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नंबर 2 जालंधर छावनी में हो रहा है। इस कार्यक्रम में जालंधर क्लस्टर के नौ स्कूलों के लगभग 300 छात्र भाग ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में समूह नृत्य, एकल नृत्य, गायन, वाद्य संगीत, 2डी और 3डी दृश्य कला, स्वदेशी खिलौने और स्थानीय शिल्प सहित विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शन



शामिल हैं। मेजबान स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रविंदर कुमार ने स्वागत भाषण दिया।

इस अवसर के मुख्य अतिथि पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नंबर 3



जालंधर छावनी के प्रधानाचार्य श्री हरजिंदर भाटिया थे। अन्य गणमान्य अतिथियों में श्री शशिकांत, केवी नंबर 4 जालंधर छावनी के प्रधानाचार्य और पीएम

श्री केन्द्रीय विद्यालय नंबर 1 जालंधर छावनी के हनी मेहता शामिल थे। यह कार्यक्रम एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के अनुरूप आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य युग्मित राज्य आंध्रप्रदेश के सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और एकीकरण को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम के अंत में मेजबान स्कूल के उप प्रधानाचार्य श्री उग्र मोहन यादव ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

धन्यवाद

अपनी प्रतिक्रिया kvs2.cca@gmail.com पर भेजें।